वैष्णव गीत

श्रील प्रभुपाद उवाच

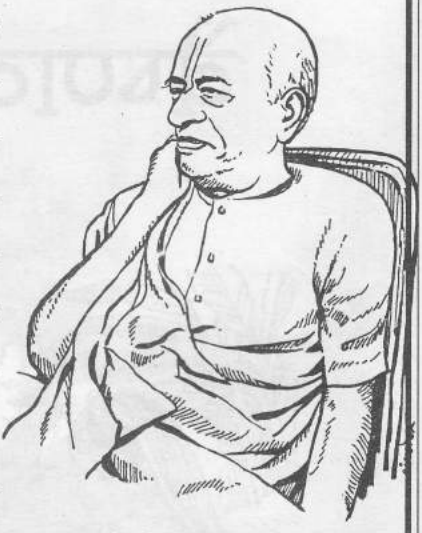

...पुस्तकें लिखना और जनता को प्रबुद्ध बनाने के लिए उन्हे प्रकाशित करना भगवान की असली सेवा है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती का यह मत था और उन्होंने अपने शिष्यों से विशेष रूप से कहा कि वे पुस्तकें लिखे। वे मन्दिर की स्थापना करने की अपेक्षा पुस्तकें प्रकाशित करना वस्तुतः श्रेयस्कर समझते थे। मन्दिर-निर्माण तो सामान्य जनता तथा नवदीक्षित भक्तों के लिए होता है, किन्तु बढे-चढे तथा शक्त्याविष्ट भक्तों का कार्य पुस्तकें लिखना, उन्हे प्रकाशित करना और उनका चतुर्दिक् वितरण करना है। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के अनुसार साहित्य का वितरण बृहत् मृदंग को बजाने जैसा है। फलतः हम अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के सदस्यों से सदैव अनुरोध करते रहते हैं कि वे अधिक से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करें और सारे जगत में उनका व्यापक वितरण करे। इस तरह श्रील रूपगोस्वामी के पदचिन्हों पर चलकर मनुष्य रूपानुग भक्त बन सकता है।

(चैतन्य चरितामृत मध्य १९.१३२)

अनुक्रमणिका

अ

अक्रोध परमानंद नित्यानंद राय ६७

अधरं मधुरं वदनं मधुरं ८७

अनादि करम फले, पडि भवार्णव जले ३२

अवतार सार, गोरा अवतार ५७

अंतर मंदिर जागो जागो ८८

आ

आत्मनिवेदन, तुया पदे करि ३४

आमार जीवन सदा पापे रत ३४

आमि जमुना पुलिने, कदम्ब कानने ३०

आर केन मायाजाले ३५

आरे भाई ! भज मोर गौरांग चरण ५७

आमार निताई मिले ना भोलामन ८९

उ

उदिल अरुण पूरब भागे ११

उज्वल वरण गौरवर देहं ८०

ए

एइ बार करुणा कर वैष्णव ४५

एक दिन शांतिपुरे २०

एखोन बुझिनू प्रभु ! तोमार चरण ४३

एमन दुर्मति, संसार भितरे ३५

ओ

ओरे मन, भाल नाहि लागे ए संसार ३८

ओहे ! वैष्णव ठाकूर, दयार सागर २७

क

कदाचित कालिंदीतट ९२

कबे गौरवने, सुरधुनी तटे २२

कबे मुइ वैष्णव चिनिव हरि हरि ३६

कबे ह बे हेन दशा मोर ३७

कलि कुक्कुर कदन जदि चाओ (हे) ४२

कबे श्रीचैतन्य मोर करिबेन दया ४१

कबे ह' बे बोलो से दिन आभार २३

कृपा कर वैष्णव ठाकूर ३६
कृष्ण किर्तन गान नर्तन परौ १०
कृष्ण जिनका नाम है ७२
कृष्ण तब पुण्य ह' बे भाई ७
कृष्ण देव भवन्तम् वन्दे ७०
कृष्ण हइते चतुर्मुख ५८
कि रूपे पाइब सेवा मुइ दुराचार ५४
कुसुमित वृंदावने, नाचतो सखीगणे ५४
कुंकुमाक्त कांचनाब्ज गर्वहारि गौराभा ८१
केनो हरे कृष्ण नाम हरि बोले ४०

ग

गाय गोराचाँद ज़ीवेर तरे १३
गाय गोरा मधुर स्वरे १२
गांगेय चांपये ८५
गुरुदेव ! कृपाबिंदू दिया, करो एइ दासे ९२
गुरुदेव ! बड कृपा करि १७
गुरुदेव, व्रजवने व्रजभूमिवासी जने १७
गोपीनाथ, मम निवेदन शुनो (भाग १) १३
गोपीनाथ, घुचाओ संसार ज्वाला (भाग २) १४
गोपीनाथ, आमार उपाय नाई (भाग ३) १५
गौरांग करुणा कर दीन हीन जने ४७
गोरांग बोलिते ह' बे ४६
गौराङ्ग तुमि मोरे दया ना छाडिहो ६८
गौरांगेर दू' टी पद, जार धन सम्पद ४८
गोरा पहूँ ना भजिया मैनु ५२

च

चेतोदर्पण मार्जनम् ५

ज

जय गोविंद, जय गोपाल ९१
जय जय गोराचांदेर आरति को शोभा २४
जय जय जगन्नाथ शचीरनंदन ७५
जय जय राधाकृष्ण युगल मिलन ३८
जय राधा माधव, कुंजबिहारी २१
जय राधा माधव, राधा माधव राधे ७१

जय राधे जय कृष्ण, जय वृंदावन ६९
जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानंद ५३
जीव जागो, जीव जागो १२
जे अनिल प्रेमधन करुणा प्रचुर ४८
ठ
ठाकुर वैष्णव गण ! करि एइ निवेदन ५५
ठाकुर वैष्णव-पद, अवनीर सुसम्पद ५६
ढ
ढुले ढुले गौरा चांद ८८
त
तुमि सर्वेश्वरेश्वर ब्रजेंद्रकुमार २७
द
दयाल निताई चैतन्य बोले ३२
दुःखेर सागरे भासियेछि ८९
दुर्लभ मानव जनम लभिया संसारे ३९
दुष्ट मन तुमि किसेर वैष्णव ? ५९
ध
धन मोर नित्यानंद, पति मोर गौरचंद्र ५२
न
न योगिसद्धर्न ममास्तु ८४
नदिया गोद्रुमे नित्यानंद महाजन ३३
नमस्ते नरसिंहाय ४
नामामीश्वरं सच्चिदानंदरुपं ६२
नमो नमः तुलसी महाराणी वृंदे ६
नमो नमः तुलसी कृष्णप्रेयसी ५
नव गौरवरं नव पुष्प शरम् ७८
नव नीरद निंदित कांति धरम् ८३
नारद मुनि बाजाय वीणा १८
निताई गुणमणि आमार निताई ६७
निताई नाम हाटे, ओ ! के जाबिरे भाई ४१
निताई पद कमल, कोटिचंद्र ५०
निजपति भुजदंड ७७
प
परम करुणा, पहुँ दुइजन ६७

प्रभु तव पद युगे मोर निवेदन ४३
प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं ६४
ब
बोडो कृपा कइले कृष्ण ८
बोडो सुखेर खबर गाय २९
भ
भज भक्तवत्सल श्रीगौरहरि २५
भज रे भज रे आमार मन अतिमंद ६८
भजहुँ रे मन श्रीनंदनंदन ६३
भाले गोरा गदाधरेर आरती नेहारी १६
भ्रातुरन्तकस्य ८६
भुलिया तोमारे, संसार आसिया ३३
म
मधुकर रंजित मालति मंडित ७१
मधुरं मधुरेभ्यो' पि ७३
मम मन मंदिरे, रहो निशिदिन ३०
मानस, देह, गेह, जो किछु मोर १९
य
यदि गौर ना होईतो, तबे कि होइतो ७४
यशोमति नंदन ब्रजबर नागर २६
र
राधा कृष्ण प्राण मोर युगल किशोर ४७
राधा कृष्ण बोल, बोल बोलोरे सबाई २०
राधा कुंड कुंजकुटीर, गोवर्धन पर्वत २२
राधे ! जय जय माधव दयिते ७०
व
वंदे कृष्ण नंदकुमार ९१
वृंदावन रम्य स्थान, दिव्य ५१
वृंदावन वासी यत वैष्णवेर गण ७५
व्रजेप्रसिद्धं नवनीत चौरं, गोपांगनाना ८२
विद्यार विलासे, काटाइनु काल २९
विभावरी शेष, आलोक प्रवेश २८
श
शुद्ध भक्त चरण रेणु, भजन अनुकूल २४

शुनियाछि साधु मुखे बले सर्वजन ५३
श्रीतकमला कुचमंडल ! धुतकुंडल ! ६५
श्रीकृष्ण कीर्तन यदि मानस तोहार ३१
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दया कर मोरे ५०
श्रीगुरु चरण पद्म केवल भक्तिसद्म ४९
श्री गुरु चरण कमल भज मन ९१
श्रीरूप मंजरी पद, सेई मोर संपद ५१
स
संसार दावा नललीढ लोक ३
सर्वस्व तोमार, चरणे सम्पिया ४४
सुंदर कुंडल मधुर विशाला ७३
सुंदर लाला, शचीर दुलारा ९०
ह
हरि बल, हरि, बल हरिबल भाइरे १८
हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ४६
हरि हरि कबे मोर ह' बे हेम दिन ३७
हरि हे ! प्रपंचे पडिया ३५
हरि हे दयाल मोर जय राधानाथ ७६
हरि हरि ! बिफले जनम गोआँइनू ४५
हे गोविंद हे गोपाल, केशव माधव ६६

मंगलाचरण

श्रीगुरू प्रणाम

ॐ अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

श्रीरूप प्रणाम

श्री चैतन्यमनोभिष्टं स्थापितं येन भूतले ।
स्वयंरूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदांतिकम् ।।

सपरिकर-श्रीहरी-गुरु-वैष्णव-वंदनम्

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुं वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण - रघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं
श्री राधाकृष्णपादान् सहगण - ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च ।।

श्रील भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद प्रणती

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले
श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिन् इति नामिने ।
नमस्ते सारस्वते देवे गौरवाणी प्रचारिणे
निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे ।।

श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकूर प्रणती

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले
श्रीमते भक्तिसिद्धांत सरस्वती इति नामिने ।
श्री वार्षभानवीदेवी दयिताय कृपाब्धये
कृष्णसम्बन्धविज्ञानदायिने प्रभवे नमः ।।
माधुर्योज्वल प्रेमाढ्य श्रीरूपानुगभक्तिद
श्री गौरकरूणाशक्ति विग्रहाय नमोऽस्तुते ।
नमस्ते गौरवाणी श्रीमूर्तये दीनातारिणे
रूपागुन विरुद्धापसिद्धांतध्वांतहारिणे ।।

श्रील गौरकिशोर प्रणती

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्यमूर्तये ।
विप्रलम्भराम्बोधे पादाम्बुजाय ते नमः ।।

श्रील भक्तिविनोद ठाकूर प्रणती

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द नामिने ।
गौरशक्तिस्वरूपाय रूपानुगवरायते ।।

श्रील जगन्नाथ प्रणती

गौराविर्भावभूमेस्तं निर्देष्टा सज्जनप्रियः ।
वैष्णवसार्वभौम श्री जगन्नाथाय ते नमः ।।

श्री वैष्णव प्रणाम

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ।।

श्री गौराङ्ग महाप्रभू प्रणाम

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम प्रदाय ते ।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः ।।

श्री पञ्चतत्त्व प्रणाम

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम् ।
भक्तावतारं भक्तारव्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ।।

श्रीकृष्ण प्रणाम

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते ।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तुते ।।

श्री सम्बन्धाधिदेव प्रणाम

जयतां सूरतौ पङ्गोर्मम मन्दमतेर्गती ।
मत्सर्वस्वपदांभोजौ राधामदनमोहनौ ।।

श्री अभिधेयाधिदेव प्रणाम

दिव्यद्वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः
श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ ।
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्ददेवौ
प्रेष्ठालिभिः सेव्यमानौ स्मरामी ।।

श्री प्रयोजनाधिदेव प्रणाम

श्रीमान रासरसारंभी वंशीवटतटस्थितः ।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेस्तु नः ।

श्री राधा प्रणाम

तप्तकाञ्चगौराङ्गी राधे वृन्दावनेश्वरी ।
वृषभानुसुते देवी प्रणमामी हरिप्रिये ।।

श्री पञ्चतत्त्व मंत्र

(जय) श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद ।
श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृंद ।।

हरे कृष्ण महामंत्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

* * * * * *

श्री श्री गुर्वाष्टक

(श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकूर विरचित)

संसार दावानललीढ लोक
त्राणाय कारुण्यघनाघनात्वम् ।
प्राप्तस्य कल्याणगुणार्णवस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।१।।

महाप्रभोः कीर्तननृत्यगीत
वादित्रमाद्यान्मनसो रसेन ।
रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्ग भाजो
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।२।।

श्रीविग्रहाराधननित्यनाना
श्रृङ्गारतन्मंदिरमार्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।३।।

चतुर्विध श्रीभगवत् प्रसाद
स्वाद्वन्न तृप्तान् हरिभक्तसङ्घान।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव
वन्दे गुरोः श्रीचरणाविन्दम् ।।४।।

श्रीराधिकामाधवयोरपार
माधुर्यलीलागुणरूपनाम्नाम् ।
प्रतिक्षणाऽस्वादनलोलुपस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्द्म ।।५।।

निकुञ्जयूनो रतिकेलीसिद्धयै
या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्राति दाक्ष्याद्अतिवल्लभस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।६।।

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै
रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः ।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।७।।

यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो
यस्याऽप्रसादान्न गतीः कुतोऽपी ।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसंध्यम्
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।।८।।

* * * * * *

श्रीनृसिंह प्रणाम

नमस्ते नरसिंहाय, प्रह्लादह्लाददायिने ।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिला टंकनखालये ।।
इतो नृसिंहः परतो नृसिंहः, यतो यतो यामि ततो नृसिंह ।
बहिर्नृसिंह हृदये नृसिंह, नृसिंहमादि शरणं प्रपद्ये ।

तव करकमलवरे नखम् अद्भुत श्रृङ्ग ।
दलित हिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम ।
केशव धृत नरहरिरूप, जय जगदीश हरे ।।

* * * * * *

श्री तुलसी प्रणाम

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
कृष्णभक्तिप्रदे देवि, सत्यवत्यै नमो नमः ।।

श्री तुलसी कीर्तन

(श्रील नरोत्तमदास ठाकूर विरचित)

नमो नमः तुलसी ! कृष्णप्रेयसी (नमो नमः)
राधाकृष्ण सेवा पाबो एइ अभिलाषी ।।धृ।।

जे तोमार शरण लोय तार वाञ्छा पूर्ण होय ।
कृपा कोरी ऽ कोरो तारे वृन्दावनवासी ।।१।।

मोर एइ अभिलाष बिलास कुञ्जे दियोवास ।
नयने हेरिबो सदा जुगल रूपराशी ।।२।।

एइ निवेदन धरो सखीर अनुगत कोरो ।
सेवा अधिकार दिये कोरो निज दासी ।।३।।

दीन कृष्णदासे कोय एइ जेन मोर होय ।
श्रीराधा गोविन्द प्रेमे सदा जेन भासि ।।४।।

श्री तुलसी प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणः पदे पदे ।।

* * * * * *

श्री शिक्षाष्टक

(स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु विरचित)

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं
श्रेयः कैरवचंद्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ।
आनंदाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्ण संकीर्तनम् ।।१।।

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादशी तव कृपा भगवन् ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाऽजनी नानुरागः ।।२।।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ।।३।।

न धनं न जनं न सुन्दरीं कविता वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि ।।४।।

अयि नन्दतनुज किङ्करं पतितं मां विषमे भवांबुधौ ।
कृपया तव पादपंकज-स्थिल-धूलीसदृशं विचिन्तय ।।५।।

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ।।६।।

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्दविरहेण मे ।।७।।

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु माम् अदर्शनान्मर्महतां करोतु वा ।
यथा तथा वा विद धातु लंपटो मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ।।८।।

* * * * *

श्री तुलसी आरती

(श्रील चंद्रशेखर कवी विरचित)

नमो नमः तुलसी महाराणी
वृन्दे महाराणी नमो नमः
नमो रे नमो रे मैया नमो नारायणी।।१।।

जॉको दरशे, परशे अघ - नाश - इ
महिमा बेद - पुराणे बाखानि ।।२।।

जॉको पत्र, मंजरी कोमल
श्रीपित चरण कमले लपटानी
धन्य तुलसी मैया, पूरण तप किये,
श्री शालग्राम महा पटराणी।।३।।

धूप, दीप, नैवेद्य, आरती
फुलना किये वरखा वरखा नि
छप्पन्न भोग, छत्तिश ब्यंजन,
बिना तुलसी प्रभु एक नाहि मानि ।।४।।

शिव, शुक, नारद और ब्रह्मादिको,
धूरत फिरत महा मुनि ज्ञानी
चंद्रशेखर मैया, तेरा जश गाओवे
भकति दान दीजिये महाराणी ।।५।।

* * * * * *

भगवान श्रीकृष्ण के चरणकमलों के प्रति प्रार्थना

(कृष्णकृपाश्रीमूर्ती ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद विरचित)

कृष्ण तब पुण्य हबे भाइ
ए पुण्य कोरिबे जबे, राधाराणी खुशी हबे
ध्रुव अति बोलि तोमा ताइ ।।१।।

श्री सिद्धांत सरस्वती शचि सुत प्रियअति
कृष्ण सेबाय जॉर तुल नाइ
सेइ से मोहांत गुरु जगतेर मधे उरु
कृष्ण भक्ति देय ठाइ ठाइ ।।२।।

तॉर इच्छा बलवान पाश्चात्येते ठान ठान
होय जाते गौरांगेर नाम
पृथ्वीते नगरादि आसमुद्र नद नदी
सकलेइ लोय कृष्ण नाम ।।३।।

ताहले आनंद होय तबे होय दिग्विजय
चैतन्येर कृपा अतिशय
माया दुष्ट जत दुःखी, जगते सबाई सुखी
वैष्णवेर इच्छा पूर्ण होय।।४।।

से कार्ज जे कोरिबारे आज्ञा जदि दिलो मोरे
जोग्य नहि अति दीन हीन
ताइ से तोमार कृपा मागितेछि अनुरूपा
आजि तुमि सबार प्रवीण ।।५।।

तोमार से शक्ति पेले, गुरु–सेबाय वस्तु मिले
जीवन सार्थक जदि होय

सेइ से सेबा पाइले ताहले सुखी हले
तब संग भाग्यते मिलोय ।।६।।

एवं जनं निपतितं प्रभवाहि-कूपे
कामाभिकामं अनुयः प्रपतन् प्रसंगात
कृत्वात्मसात् सुरर्षिणा भगवान गृहीतः
सोऽहं कथम् नु विसृजे तव भृत्य-सेवाम् ।।७।।

तुमि मोर चिर साथी भुलिया मायार लाथि
खाइयाछि जन्म-जन्मांतरे
अजि पुनः ए सुजोग जदि होय जोगाजोग
तबे पारि तुहे मिलिबारे ।।८।।

तोमारे मिलने भाइ आबार से सुख पाई
गोचारने घुरि दिन भोर
कत बने छुटाछुटि बने खाइ लुटापुटि
सेइ दिन कबे हबे मोर ।।९।।

आजि से सुबिधाने तोमार स्मरण भेलो
बोडो आशा डाकिलाम् ताइ
आमि तोमार नित्य-दास ताइ कोरि एत आश
तुमि बिना अन्य गति नाइ ।।१०।।

* * * * * *

मार्किने भागवत-धर्म

(कृष्णकृपाश्रीमूर्ती ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद विरचित)

बोडो कृपा कोइले कृष्ण अधमेर प्रति
कि लागियानिले हेथा कोरो एबे गति ।।१।।

आछे किछु कार्ज तब एइ अनुमाने
नहे केनो आनिबेन एइ उग्र-स्थाने ।।२।।

रजस्तमो गुणे एरा सबाइ आच्छन्न
वासुदेव-कथा रुचि नहे से प्रसन्न ।।३।।

तबे जदि तब कृपा होय अहैतुकि
सकल-इ-सम्भव होय तुमि से कौतुकी ।।४।।

कि भावे बुझाले तारा बुझे सेइ रस
एत कृपा कोरो प्रभु कोरि निज-बश ।।५।।

तोमार इच्छाय सब होय माया-बश
तोमार इच्छाय नाश मायार परश ।।६।।

तब इच्छा होय जदि तादेर उद्धार
बुझिबे निश्चइ तबे कथा से तोमार ।।७।।

भागवतेर कथा से तब अवतार
धृत होइया शुने जदि काने बार बार ।।८।।

श्रृण्वतां स्वकथाः कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
हृद्यन्तःस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ।।
नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतं सेवया ।
भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी ।।
तदा रजस्तमोभावाः कामलोभादयश्च ये ।
चेत एतैरनाविद्धं स्थितं सत्त्वे प्रसीदति ।।
एवं प्रसन्नमनसो भगवद्भक्तियोगतः ।
भगवत्तत्त्वविज्ञानं मुक्तसङ्गस्य जायते ।।
भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि दृष्ट एवात्मनीश्वरे ।।९।।

रजस तमो हते तबे पाइबे निस्तार
हृदोयेर अभद्र सब घुचिबे ताहार ।।१०।।

कि कोऽरे बुझाबो कथा बर सेइ चाहि
क्षुद्र आमि दीन हीन कोनो शक्ति नाहि ।।११।।

अथच एनेच्छो प्रभु कथा बोलिबारे
जे तोमार इच्छा प्रभु कोरो एइ बारे ।।१२।।

अखिल जगत-गुरु ! बचन से आमार
अलंकृत कोरिबार क्षमता तोमार ।।१३।।

तब कृपा हऽले मोर कथा शुद्ध हबे
शुनिया सबार शोक दुःख जे घुचिबे ।।१४।।

अनियोछो जदि प्रभु आमारे नाचाते
नाचाओ नाचाओ प्रभु नाचाओ से मते
काष्ठेर पुत्तलि जथा नाचाओ से मते ।।१५।।

भक्ति नाइ वेद नाइ नामे खुब दारो
'भक्तिवेदान्त' नाम एबे सार्थक कोरो ।।१६।।

* * * * * *

श्री श्री षड्-गोस्वामी-अष्टक

(श्रील श्रीनिवास आचार्य विरचित)

कृष्णोत्कीर्तन-गान-नर्तन-परौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराऽधीरजन-प्रियौ-प्रियकरौ निर्भत्सरौ पूजितौ ।
श्री चैतन्यकृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।१।।

नानाशास्त्र-विचारणैक निपुणौ सद्धर्म-संस्थापकौ
लोकांना हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ-शरण्याकरौ ।
राधाकृष्ण पदारविन्द-भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।२।।

श्रीगौराङ्ग-गुणानुवर्णन-विधौ श्रद्धा-समृद्ध्यान्वितौ
पापोत्ताप-निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्द-गानामृतैः ।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनैक-निपुणौ कैवल्य-निस्तारकौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।३।।

त्यक्त्वा तूर्णमशेष-मण्डलपति-श्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीन-गणेशकौ करुणया कौपीन-कन्थाश्रितौ ।
गोपीभाव-रसामृताब्धि लहरी कल्लोल मग्नौ मुहुर
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।४।।

कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्णे मयूराकुले
नानारत्न-निबद्ध-मूल-विटप-श्रीयुक्त वृन्दावने ।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।५।।

संख्यापूर्वक-नामगाननतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहार-विहारकादि-विजितौ चात्यन्त-दीनौ च यौ ।
राधाकृष्ण-गुणस्मृतेर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।६।।

राधाकुण्ड-तटें कलिन्द-तनया तीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद-वशादशेष दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।७।।

हे राधे ! व्रजदेविके ! च ललिते ! हे नंदसूनो ! कुतः
श्री गोवर्धन-कल्पपादप-तले कालिन्दिवन्ये कुतः
घोषन्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।८।।

* * * * * *

श्रील भक्तिविनोद ठाकूर विरचित भजन

अरुणोदय कीर्तन

(गीतावली)

भाग १

उदिलो अरुण पूरब-भागे, द्विज - मणि गोरा अमनी जागे,
भकत-समूह लोइया साथे, गेला नगर - ब्राजे ।।१।।

'ताथई ताथई' बाजलो खोल, घन घन ताहे झाजेर रोल,
प्रेमे ढल ढल सोणार अंग, चरणे नुपूर बाजे ।।२।।

मुकुंद माधव यादव हरी, बोलेन बोलो रे वदन भोरी,
मिछे निद बशे गेलो रे राति, दिवस शरीर साजे ।।३।।

एमन दुर्लभ मानव - देहो, पाइया कि कोरो भाव ना केहो
एबे ना भजिले यशोदा - सुत, चरमे पोरिबे लाजे ।।४।।

उदित तपन होइले अस्त, दिन गेलो बोलिऽ होइबे ब्यस्त,
तबे केनो एबे आलस होय ना भज हृदोय - राजे ।।५।।

जीवन अनित्य जानह सार, ताहे नाना-विध विपद - भार,
नामाश्रय कोरिऽ जतने तुमि थाकह आपन काजे ।।६।।

जीवेर - कल्याण - साधन - काम, जगते आसिऽए मधुर नाम,
अविद्या - तिमिर-तपन रूपे, हृद् - गगन बिराजे ।।७।।

कृष्ण नाम सुधा कोरिया पान, जुराओ भकति विनोद – प्राण,
नाम बिनो किछु नाहिको आरो चौदा – भुवन – माझे ॥८॥

भाग २

जीव जागो, जीव जागो, गौरा चांद बोले
कोत निद्रा जाओ माया – पिशाचीर कोले ॥१॥

भजिबो बोलिया एसे सम्सार – भितरे
भूलिया रोहिले तुमि अविद्यार भरे ॥२॥

तोमारे लोइते आमि होइनु अवतार
आमि बिना बंधु आर के आछे तोमार ॥३॥

एनेछि औषधि माया नशिबारो लगि ऽ
हरी – नाम महामंत्र लाओ तुमि मागि ऽ ॥४॥

भकति विनोद प्रभु – चरणे पडिया
सेइ हरि – नाम मंत्र लोइलो मागिया ॥५॥

* * * * * *

श्रीनगर कीर्नन

(गीतावली)

गाय गोरा मधुर स्वरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

गृहे थाको, वने थाको, सदा 'हरि' बोले ऽ डाको
'सुखे दुःखे भुलो ना' को, वदने हरि – नाम कोरो रे ॥१॥

माया जाले बद्ध हो ऽ ये, आछो मिछे काज लो ऽ ये
एखोन चेतन पे ऽ ये, 'राधा – माधव' नाम बोलो रे ॥२॥

जीवन होइलो शेष, ना भजिले हृषीकेश
भकतिविनोदोपदेश, एकबार नाम – रसे मातो रे ॥३॥

* * * * * *

गाय गोराचांद जिबेर तरे

गाय गोराचाँद जीबेर तोरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।१।।

एकबार बोल रसना उच्चैः स्वरे
(बोल) नन्देर नंदन, जशोदा जीबन,
श्री-राधा-रमण, प्रेम-भरे ।।२।।

(बोल) श्री मधुसूदन, गोपी प्राणधन
मुरली-बदन, नृत्य कोरेऽ
(बोल) अघ-निसूदन, पूतना-घाटन
ब्रह्म-विमोहन, ऊर्ध्व-कोरे ।।३।।

* * * * * *

गोपीनाथ

(कल्याण कल्पतरु)

भाग १

गोपीनाथ, मम निवेदन शुनो
विषयी दुर्जन, सदा काम - रत
किछु नाहि मोर गुण ।।१।।

गोपीनाथ, आमार भरसा तुमि
तोमार चरणे, लोइनु शरण,
तोमार किंकोरो आमि ।।२।।

गोपीनाथ, केमोने शोधिबे मोरे
ना जानि भकति, कर्मे जड मति
पोडेछि सोम्सार घोरे ।।३।।

गोपीनाथ, सकली तोमार माया
नाहि मम बल, ज्ञान सुनिर्मल
स्वाधिन नहे ए काया ।।४।।

गोपीनाथ, नियत चरणे स्थान
मागे ए पामर, कांदिया कांदिया,
कोरोहे करुणा दान ।।५।।

गोपीनाथ, तुमि तोऽसकली पारो
दुर्जने तारिते, तोमार शकति
के आछे पापिर आरो ।।६।।

गोपीनाथ, तुमि कृपा पाराबार
जीवेर कारणे, आसिया प्रपंचे,
लिला कोइले सुबिस्तार ।।७।।

गोपीनाथ, आमि कि दोषे दोषी
असुर सकल, पाइलो चरण
विनोद थाकिलो बोसिऽ ।।८।।

* * * * * *

भाग २

गोपीनाथ. घुचाओ सम्सार-ज्वाला
अविद्या-जातना, आरो नाहि सहे
जनम-मरण-माला ।।१।।

गोपीनाथ, आमि तोऽकामेर दास
विषय-बासना, जागिछे हृदोये,
फाडिछे करम फास ।।२।।

गोपीनाथ, कबे वा जागिबो आमि
काम-रूप-अरि, दूरे तेयागिबो,
हृदोये स्फुरिबे तुमी ।।३।।

गोपीनाथ, आमि तोऽतोमार जन
तोमारे छाडिया, सम्सार भजिनु
भूलिया आपन धन ।।४।।

गोपीनाथ, तुमि तोऽसकलि जानो
आपनार जने, दंडिया एखनो
श्री चरणे देहो स्थानो ।।५।।

गोपीनाथ, एइ कि विचार तब
बिमुख देखिया, चारो निज-जने,

ना कोरोऽकरुण-लब ।।६।।

गोपीनाथ, आमि तो मूरख अति
किसे भालो होय, कभु ना बुझिनु
ताइ हेनो मम गति ।।७।।

गोपीनाथ, तुमि तोऽपंडित-बर
मूढेर मंगल, तुमि अन्वेषिबे
ए दासे ना भावोऽपर ।।८।।

* * * * * *

भाग ३

गोपीनाथ, आमार उपाय नाइ
तमि कृपा कोरिऽ, आमारे लोइले
सम्सारे उद्धार पाइ ।।१।।

गोपीनाथ, पोडेछि मायार फेरे
धन, दार, सुत घिरेछे आमारे
कामेते रेखेछे जेरे ।।२।।

गोपीनाथ, मन जे पागल मोर
ना माने शासन, सदा अचेतन
विषये रोऽयेछे घोर ।।३।।

गोपीनाथ, हार जे मेनेछि आमि
अनेक जतन, होइलो बिफल
एखनौ भरसा तुमि ।।४।।

© Enchantingkerala.org

गोपीनाथ, केमोने होइबे गति
प्रबल इंद्रिय, बोशि-भूत मन,
ना छाडे विषय-रति ।।५।।

गोपीनाथ, हृदोय बोसिया मोर
मनके शमिया, लहो निज पाने
घुचिबे विपद घोर ।।६।।

गोपीनाथ, अनाथ देखिया मोरे
तुमि हृषिकेश, हृषिक दमिया
तारे हे सम्श्रति घोरे ।।७।।

गोपीनाथ, गलाय लेगेछे फास
कृपा-असि धोरिऽबन्धन छेडिया,
विनोदे कोरोहो दास ।।८।।

* * * * * *

श्री गौर गोविंद मंगलारती

भाले गोरा गदाधरेर आरती नेहारि ।
नदीया पूरब भावे जाँउ बलिहारी ।।१।।

कल्पतरुतले रन्तसिंहासनोपरि ।
सबु सखी वेष्टित किशोर-किशोरी ।।२।।

पुरट जडित कत मणि गजमति ।
झमकि झमकि लभे प्रति अंग ज्योति ।।३।।

नील नीरद लागि विद्युत माला ।
दुंहु अङ्ग मिलि शोभा भुवन उजाला ।।४।।

शंख बाजे, घंटा बाजे, बाजे करताल ।
मधुर मृदंग बाजे, परम रसाल ।।५।।

विशाखादि सखीवृन्द दुहुँ गुण गाओये ।
प्रियनर्मसखीगण चामर ढुलाओये ।।६।।

अनंगमञ्जरी, चुया चन्दन देओये ।
मालतीर माला रूपमञ्जरी लागाओये ।।७।।

पंच प्रदीपे धरि कर्पूर बाति ।
ललितासुन्दरी करे युगल आरती ।।८।।

देवी लक्ष्मी श्रुतिगण धरणी लोटाओये ।
गोपीजन अधिकार रओयत गाओये ।।९।।

भक्तिविनोद रहि सुरभिकि कुंजे ।
आरती दशने प्रेम सुख भुंजे ।।१०।।

* * * * * *

गुरुदेव वंदना

(१)

गुरुदेव !
बड कृपा करि, गौडवन-माझे, गोद्रुमे दियाछ स्थान ।
आज्ञा दिला मोरे, एइ व्रजे बसि, हरिनाम कर गान ।।१।।

किन्तु कबे प्रभो, योग्यता अर्पिवे, ए दासेरे दया करि ।
चित्त स्थिर ह वे, सकल सहिब, एकान्ते भजिव हरि ।।२।।

शैशव-यौवने, जडसुख-संगे, अभ्यास हइल मन्द ।
निजकर्म-दोषे, ए देह हइल, भजनेरे प्रतिबन्ध ।।३।।

वार्द्धक्ये एखन, पञ्चरोगे हत, केमने भजिव बल ।
काँदिया-काँदिया, तोमार चरणे, पडियाछि सुविह्वल ।।४।।

(२)

गुरुदेव, व्रजवने, व्रजभूमिवासी जने,
शुद्ध भक्ते, आर विप्रगणे
इष्ट मंत्रे, हरिनामे, युगल भजन कामे
कर रति अपूर्व यतने ।।१।।

धरि मन चरणे तोमार ।
जानियाछि एवे सार, कृष्णभक्ति बिना आर,
नाहि घुचे जीवेर संसार ।।२।।

कर्म, ज्ञान, तपः, योग, सकलइ त कर्मभोग,
कर्म छाडाइते के नारे ।
सकल छाडिया भाइ, श्रद्धादेवीर गुण गाइ,
याँर कृपा भक्ति दिते पारे ।।३।।

छाडि दम्भ अनुक्षण, स्मर अष्टतत्त्व मन,
कर ताहे निष्कपट रति ।
सेइ रति प्रार्थनाय, श्रीदास गोस्वामी पाय,
ए भक्तिविनोद करे नति ।।४।।

* * * * * *

हरि बल–हरि बल–हरिबल भाइरे

हरि बल–हरि बल–हरिबल भाइरे ।
हरिनाम आनियाछे गौराङ्ग निताईरे ।।१।।
(मोदेर दुःख देखेरे)

हरिनाम बिना जीवेर अन्य धन नाई रे ।
हरिनामे शुद्ध ह' लो जगाइ–माधाइ रे ।।२।।
(बड पापी छिल रे)

मिछे मायाबद्ध ह'ये जीवन काटाइ रे ।
(आमि आमार ब'ले रे)
आशावशे घुरे–घुरे आर कोथा याइरे ।।३।।
(आशार शेष नाइ रे)

हरि ब' ले देओ भाइ आशार मुख छाइ रे ।
(निराश त' सुख रे)
भोग–मोक्ष–वांछा छाडि हरिनाम गाइरे ।।४।।
(शुद्ध सत्त्व ह ये रे)

ना चेयेओ नामेर गुणे ओ सब फल पाइरे।
(तुच्छ फलेर प्रयास छेडे रे)
विनोद बले याइ ल ये नामेर बालाइरे ।।५।।
(नामरे बालाइ छेडे रे)

* * * * * *

नाम–तत्त्व

नारद मुनि, बाजाय वीणा, राधिकारमण–नामे ।
नाम अमनि, उदित हय, भकत–गीत–सामे ।।

अमिय–धारा, वरिषे घन, श्रवण–युगले गिया ।
भकतजन, सघने नाचे, भरिया आपन हिया ।।

माधुरी–पुर, आसव पशि, माताय जगत–जने ।
केह वा काँदे, केह वा नाचे, केह माते मने मने ।।

पञ्चवदन, नारदे धरि, प्रेमेर सघन रोल ।
कमलासन, नाचिया बले, 'बोल बोल हरिबोल' ।।

सहस्रानन, परमसुखे, 'हरि हरि' 'बलि' गाय ।
नाम-प्रभावे, मातिल विश्व, नाम-रस सबे पाय ।।

श्रीकृष्णनाम, रसने स्फुरि, पूराल आमार आश ।
श्रीरूप-पदे, याचये इहा, भकतिविनोद दास ।।

* * * * * *

मानस देह गेह

(शरणागती)

मानस, देहो, गेहो, जो किछु मोर
अर्पिलू तुवा पदे, नन्द-किशोर ! ।।१।।
सम्पदे विपदे, जीवने-मरणे
दाय मम गेला, तुवा ओ-पद बरणे ।।२।।
मारोबी राखोबी-जो इच्छा तोहारा
नित्य-दास प्रति, तुवा अधिकारा ।।३।।
जन्माओबि मोए इच्छा जदि तोर
भक्त गृहे जनि जन्म हौ मोर ।।४।।
कीट-जन्म हौ जथा तुवा दास
बहिर-मुख ब्रह्म-जन्मे नाहि आश ।।५।।
भुक्ति-मुक्ति-स्पृहा विहीन जे भक्त
लभैते टाको संग अनुरक्त ।।६।।
जनक, जननी, दयित, तनय
प्रभु, गुरु, पति-तुहू सर्व-मोय ।।७।।
भकतिविनोद कोहे, शूनो कान !
राधा-नाथ ! तुहू हामार पराण ।।८।।

* * * * * *

प्रसाद-सेवा

(गीतावली)

भाग १

भाई रे !

शरीर अबिद्या-जाल जोडेंद्रिये ताहे काल
जीवे फेले विषय सागोरे
ताऽर मध्ये जिव्हा अति लोभमोय सुदुर्मति,
ताऽ के जेता कठिण सम्सारे ।।१।।
कृष्ण बडो दोयामोय, कोरिबारे जिव्हा जय,
स्व-प्रसाद-अन्न दिलो भाई
सेइ अन्नामृत पाओ, राधा-कृष्ण-गुण गाओ,
प्रेमे डाको चैतन्य निताई ।।२।।

भाग २

भाई रे !

एक-दिन शांतिपुरे प्रभु अद्वैतेर घरे
दुई प्रभु भोजने बोसिलो
शाक कोरीऽ आस्वादन, प्रभु बोले भक्त-गण,
एई शाक कृष्ण आस्वादिलो ।।१।।
हेनो क-आस्वादने, कृष्ण प्रेम ऐसे मने,
सेई प्रेमे कोरो आस्वादन
जऽ-बुद्धि परि-हरिऽ प्रसाद भोजन कोरिऽ
हरी हरी बोलो सर्व जन ।।२।।

* * * * * *

राधा-कृष्ण बोल

(गीतावली)

'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई
(एइ) शिक्षा दिया, सब नदीया,
फिर् छे नेचेऽ गौर निताई
हरी-बोल बोलो रे एई शिक्षा दिया
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई ।।१।।

(मिछे) मायर बोशे, जाच्छो भेसेऽ
खाच्छो हाबुडुबु, भाई
हरी-बोल बोलो रे भाई मायार बोशे
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई ।।२।।

(जीव) कृष्ण-दास, ए बिश्वास,
कोर्ले तोऽ आर दुखो नाइ
हरी-बोल बोलो रे जीव कृष्ण दास
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई ।।३।।

(कृष्ण) बोल्बे जबे पुलक हऽ बे,
झोर्बे आँखी बोली ताइ
हरी बोल बोलो रे कृष्ण बोल्बे जबे
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई ।।४।।

'राधा-कृष्ण' बोलो, संगे चलो,
एइ मात्र भिक्षा चाइ
हरी बोल बोलो रे राधा कृष्ण बोलो
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे सोबाई ।।५।।

(जाय) सकल बिपोद, भक्तिविनोद
बोले, जखोन् ओ-नाम गाइ
हरी बोल बोलो रे जाय बिपोद
'राधा-कृष्ण' बोल बोल बोलो रे साबाई ।।६।।

* * * * * *

जय राधा माधव

(गीतावली)

(जय) राधा-माधव (जय) कुंज-बिहारी
(जय) गोपीजन-वल्लभ (जय) गिरी-वर-धारी
(जय) जशोदा-नंदन, (जय) ब्रज-जन-रंजन,
(जय) जमुना-तीर-वन-चारी

* * * * * *

राधाकुण्डतट-कुंजकुटीर

राधाकुण्डतट-कुंजकुटीर।
गोवर्धन-पर्वत, यामुनतीर ।।१ ।।

कुसुमसरोवर, मानसगंगा।
कालिन्दनन्दिनी विपुल तरंगा ।।२ ।।

वंशीवट, शशांक गोकुल, धीरसमीर।
वृन्दावन-तरुलतिका-कनीर ।।३ ।।

खगमृगकुल, मलय-वातास।
मयूर, भ्रमर, मुरली, विलास ।।४ ।।

वेणु, श्रृंग, पदचिह्न मेघमाला।
वसन्त, शशांक, शंख, करताला ।।५ ।।

युगलविलासे अनुकूल जानि।
लीला-विलास उद्दीपक मानि ।।६ ।।

ए सब छोडत कँहि नाहि जाँउ।
ए सब छोडत पराण हारांउ ।।७ ।।

भक्तिविनोद कहे, शुन कान।
तुया उद्दीपक हामारा पराण ।।८ ।।

www.iskcondesiretree.com

* * * * * *

सिद्धि लालसा

(शरणागती)

कबे गौर-वने, सुरधुनी-तटे, 'हा राधे हा कृष्ण' बोलेऽ
कांदिया बेराऽबो, देहो-सुख छाडि, नाना लता-तरु-तले ।।१।।

श्व-पच-गृहेते, मागिया खाइबो, पिबो सरस्वती-जल
पुलिने पुलिने, गडा गडि दिबो, कोरिऽ कृष्ण कोलाहल ।।२।।

धाम-बासी जने, प्रणति कोरिया, मागिबो कृपार लेष
वैष्णव-चरण-रेणु गाय माखिऽ धोरिऽअवधूत बेश ।।३ ।।

गौड-ब्रज-जने, भेद ना देखिबो, होइबो ब्रज बासी
धामेर स्वरूप, स्फुरिबे नयने होइबो राधार दासी ।।४ ।।

* * * * * *

कबे हऽबे बोलो

कबे हऽबे बोलो से-दिन आमार
(आमार) अपराध घुचीऽ शुद्ध नामे रुची,
कृपा-बले हऽबे हृदोये संचार ।।१।।
तृणाधिक हीन, कबे निजे मानीऽ
सहिष्णुता-गुण हृदोयेते आनीऽ
सकले मानद, आपनी अमानी
होय आस्वादिबे नाम-रस-सार ।।२।।
धन जन आर, कोबिता-सुंदरी,
बोलिबो ना चाहि देहो-सुख-करी
जन्मे जन्मे दाओ, ओहे गौरहरी !
अहैतुकी भक्ति चरणे तोमार ।।३।।
(कबे) कोरिते श्रीकृष्ण-नाम उच्चारण,
पुलकित देहो गदगद बचन
बैबर्ण्य-बेपाथु हऽबे संघटन,
निरंतर नेत्रे बऽबे अश्रु-धार ।।४।।
कबे नवद्वीपे, सुरधुनी-तटे,
गौर-नित्यानंद बोलीऽनिष्कपटे
नाचिया गाइया, बेडाइबो छुटे,
बातुलेर प्राय छाडिया बिचार ।।५।।
कबे नित्यानंद, मोरे कोरी दोया
छाडाइबे मोर विषयेर माया
दिया मोरे निज-चरणेर छाया,
नामेर हाटेते दिबे अधिकार ।।६।।
किनिबो, लुटिबो, हरी-नाम-रस,
नाम-रसे मातिऽ होइबो बिबश
रसेर रसिक-चरण परश
कोरिया मोजिबो रसे अनिबार ।।७।।
कबे जीबे दोया, होइबे उदोय,
निज-सुख भुलीऽ सुदिन-हृदोय
भकति विनोद कोरिया बिनोय
श्री-आज्ञा-तहर कोरिबे प्रचार ।।८।।

* * * * * *

शुद्ध भकत

(शरणागती)

शुद्ध-भकत-चरण-रेणु भजन अनुकूल
भकत सेवा, परम-सिद्धि, प्रेम-लतिकार मूल ।।१।।
माधव-तिथी, भक्ति-जननी, जतन पालन कोरी
कृष्ण बसती, बसती बोली, परम आदरे बोरी ।।२।।
गौर आमार, जे-सब स्थाने, कोरलो भ्रमण रंगे
से-सब स्थान, हेरिबो आमी, प्रणयी भकत-संगे ।।३।।
मृदंग बाद्य, शुनिते मन अबसर सदा जाचे
गौर-बिहित, कीर्तन शुनीऽ आनन्दे हृदोय नाचे ।।४।।
जुगल-मूर्ती, देखिया मोर परम आनन्द होय
प्रसाद-सेबा कोरिते होय सकल प्रपञ्च जय ।।५।।
जे-दिन गृहे, भजन देखी गृहेते गोलोक भाय
चरण-सिन्धु, देखिया गंगा सुख या सीमा पाय ।।६।।
तुलसी देखीऽ जुडाय प्राण, माधव तोषणी जानीऽ
गौर प्रिय, शाक-सेवने जीवन सार्थक मानी ।।७।।
भकति विनोद, कृष्ण-भजने, अनुकूल पाय जाहा
प्रति-दिवसे, परम-सुखे, स्वीकार कोरोय ताहा ।।८।।

* * * * * *

गौर-आरती

(गीतावली)

जय जय गोराचान्देर आरतिको शोभा
जाह्नवी-तट-वने जग-मन-लोभा ।।१।।
दक्षिणे निताईचान्द, बामे गदाधर
निकटे अद्वैत, श्रीनिवास छत्र धर ।।२।।
बोसियाछे गोराचान्द रत्न-सिंहासने
आरती कोरेन ब्रह्म-आदि देव-गणे ।।३।।
नरहरी-आदि कोरीऽ चामर ढुलाय
संजय-मुकुंद-बासु-घोष-आदि गाय ।।४।।
शंख बाजे, घंटा बाजे, बाजे करताल
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल ।।५।।

बहु कोटि चंद्र जिनी, वदन उज्वल
गल-देशे बन-माला कोरे झलमल ।।६।।
शिव-शुक-नारद प्रेमे गदगद
भकतिविनोद देखे गौरार संपद ।।७।।

* * * * * *

भोग-आरती

(गीतावली)

भज भकत-वत्सल श्री-गौरहरी
श्री-गौरहरि सोही गोष्ठ-बिहारी
नन्द-जशोमती-चित्त-हारी ।।१।।
बेला होऽ लो, दामोदर, ऐस एखनो
भोग-मंदिर बोसीऽ कोरहो भोजन ।।२।।
नंदेर निदेशे बैसे गिरी-बर-धारी
बलदेव-सह सखा बैसे सारी सारी ।।३।।
शुक्त-शाकादी भाजी नालिता कुष्माण्ड
डाली डाल्ना दुग्ध-तुम्बी दधी मोचा खांड ।।४।।
मुदग-बोडा माष-बोडा रोटिका घृतान्न
शुष्कुली पिष्टक खीर पुलि पायसान्न ।।५।।
कर्पूर अमृत-केली रम्भा खीर-सार
अमृत रसाला, अम्ल द्वादश प्रकार ।।६।।
लुची चिनी सर्पुरी लाड्डु रसाबली
भोजन कोरेन कृष्ण होऽ ये कुतूहली ।।७।।
राधिकार पक्क अन्न विविध ब्यंजन
परम आनंदे कृष्ण कोरेन भोजन ।।८।।
छले-बले लाड्डु खाय श्री-मधुमंगल
बगल बाजाय आर देय हरि-बोलो ।।९।।
राधिकादि गणे हेरिऽ नयनेर कोणे
तृप्त होऽ ये खाय कृष्ण जशोदा भवने ।।१०।।
भोजनांते पिये कृष्ण सुबासित बारि
सबे मुख प्रखालोय होऽ ये सारी सारी ।।११।।
हस्त-मुख प्रखालिया जत सखा-गणे
आनंदे विश्राम कोरे बलदेव-सने ।।१२।।

जम्बुल रसाल आने ताम्बुल-मसाला
ताहा खेये कृष्ण-चन्द्र सुखे निद्रा गेला ।।१३।।
विशालाख शिखि-पुच्छ-चामर ढुलाय
अपूर्व शय्याय कृष्ण सुखे निद्रा जाय ।।१४।।
जशोमती-आज्ञा पेऽ ये घनिष्ठ-आनीतो
श्री-कृष्ण-प्रसाद राधा भूंजे होऽ ये प्रीतो ।।१५।।
ललितादि सखी-गण अवशेष पाय
मने मने सुखे राधा-कृष्ण-गुण गाय ।।१६।।
हरि लीला एक-मात्र जॉहार प्रमोद
भोगारति गाय ठाकुर भकति विनोद ।।१७।।

* * * * * *

श्री नाम-कीर्तन

जशोमती- नंदन ब्रज-बरो-नागर,
गोकुल रंजन कान
गोपी-पराण-धन मदन-मनोहर
कालिया-दमन-विधान ।।१।।
अमल हरिनाम अमिय विलासा
विपिन-पुरंदर, नवीन-नागर-बोर,
बंशी-बदन सुवासा ।।२।।
ब्रज-जन-पालन, असुर-कुल-नाशन,
नन्द-गोधन-राखोवाला
गोविंद माधव, नवनीत-तस्कर,
सुंदर नन्द गोपाला ।।३।।
जमुना-तट-चर, गोपी-बसन-हर,
रास-रसिक, कृपामोय
श्री राधा वल्लभ, बृंदावन-नटवर
भकतिविनोद-आश्रय ।।४।।

* * * * * *

तुमी सर्वेश्वरेश्वर

(शरणागती)

तुमी सर्वेश्वरेश्वर, ब्रजेंद्र कुमार !
तोमार इच्छाय विश्वे सृजन संहार ।।१।।

तव इच्छा-मतो ब्रह्म कोरेन सृजन
तव इच्छा-मतो विष्णु कोरेन पालन ।।२।।

तव इच्छा-मते शिव कोरेन संहार
तव इच्छा-मते माया सृजे कारागार ।।३।।

तव इच्छा मते जीवेर् जनम-मरण
समृद्धी-निःपात दुःख सुख संघटन ।।४।।

मिछे माया बद्ध जीव आशा-पाशे फिरेऽ
तव इच्छा बिना किच्छु कोरिते ना पारे ।।५।।

तुमि तोऽ रक्षक आर पालक आमार
तोमार चरण बिना आशा नाही आर ।।६।।

निज-बल-चेष्टा-प्रति भरसा छाडिया
तोमार इच्छाय आछि निर्भर कोरिया ।।७।।

भकति विनोद अति दीन अकिंचन
तोमार इच्छाय ताऽ र जीवन मरण ।।८।।

* * * * * *

ओहे ! वैष्णव ठाकूर

(शरणागती)

ओहे ! वैष्णव ठाकूर, दोयार सागर
ए दासे कोरुणा कोरिऽ
दिया पद-छाया, शोधो हे आमाय
तोमार चरण धोरी ।।१।।
छय बेग दोमीऽ छय दोष शोधीऽ
छय गुण देहोऽ दासे
छय सत्-संग, देहोऽ हे आमारे
बोशेछी संगेर आशे ।।२।।

एकाकी आमार, नाही पाय बल
हरी नाम संकीर्तने
तुमी कृपा कोरीऽ श्रद्धा बिंदु दिया,
देहोऽ कृष्ण-नाम धने ।।३ ।।

कृष्णा से तोमार, कृष्णा दिते पारो,
तोमार शकती आछे
आमी तो कंगाल, 'कृष्ण' कृष्ण बोली
धाइ तव पाछे पाछे ।।४ ।।

* * * * * *

विभावरी शेष

(कल्याण कल्पतरु)

विभावरी शेष, आलोक-प्रवेश, निद्रा छाडी उठो जीव
बोलो हरी हरी, मुकुंद मुरारी, राम कृष्ण हयग्रीव ।।१ ।।

नृसिंह वामन, श्रीमधुसूदन, ब्रजेंद्र-नंदन श्याम
पूतना-घाटन, कैतभ-शातन, जय दाशरथी-राम ।।२ ।।

यशोदा दुलाल, गोविंद-गोपाल, वृंदावन पुरंदर
गोपी-प्रिय-जन, राधिका-रमण, भुवन-सुंद-बर ।।३ ।।

रावणांतकर, माखन-तस्कर गोपी-जन-वस्त्र-हारी
ब्रजेर राखाल, गोप-वृंद-पाल, चित्त-हरी बंशी धारी ।।४ ।।

योगिंद्र-बंदन, श्रीनंदनंदन, ब्रज-जन-भय-हरी
नवीन नीरद, रूप मनोहर, मोहन-बंशी-बिहारी ।।५ ।।

यशोदा नंदन, कंस निसूदन, निकुंज-रास-विलासी
कदम्ब-कानन, रास परायण, बृंद-विपिन-निवासी ।।६ ।।

आनंद-वर्धन, प्रेम-निकेतन, फुल-शर-जोजक-काम
गोपांगना गण, चित्त विनोदन, समस्त गुण-गण धाम ।।७ ।।

जमुना-जीवन, केली-परायण, मानस-चंद्र-चकोर
नाम-सुधा-रस, गोओ कृष्ण-जश, राखो वचन मन मोर ।।८ ।।

* * * * * *

विधार् विलासे

(शरणागती)

विधार विलासे काटाईनुकाल, परम साहसे आमी
तोमार चरण, ना भजिनु कभु, एखोन शरण तुमी ।।१।।

पोडिते पोडिते, भरसा बाडिलो, ज्ञान गति हबे मनी
से आशा बिफल, से ज्ञान दुर्बल, से ज्ञान अज्ञान जानी ।।२।।

जड विद्या जतो, मायार वैभव, तोमार भजने बाधा
मोह जनमिया, अनित्य सोम्सारे, जीबके करये गाधा ।।३।।

सेइ गाधा होऽ ये, सोम्सारेर बोझ, बहिनु अनेक काल
बार्धक्ये एखनो, शक्तिर अभावे, किछु नाही लागे भालो ।।४।।

जीवन जातना, होइलो एखनो, से विद्या अविद्या भेलो
अविद्यार ज्वाला, घटिलो बिषम, से विद्या होइलो शेलो ।।५।।

तोमार चरण, बिना किछु धन, सोम्सारे ना आछे आर
भकतिविनोद, जड-बिद्या-छाडी, तुवा पद कोरे सार ।।६।।

* * * * * *

दालालेर गीत

बोडो सुखेर खबोर गाई,
सुरभि-कुंजेते नामेर हाट खुलेऽ छे खोडा निताई ।।१।।

बोडो मोजार कोथा ताय
श्रद्धा मुल्ये शुद्ध-नाम सेइ हाटेते बिकाय ।।२।।

जत भक्त बृंद बासीऽ
अधिकारी देखेऽ नाम बेच्छे दारो काशीऽ ।।३।।

जदि नाम किन्बे, भाई
आमार संगे चलो, महाजनेर काछे जाइ ।।४।।

तुमी किन्बे कृष्ण नाम,
दस्तुरी लोइबो आमी, पूर्ण हऽ बे काम ।।५।।

बोडो दोयाल नित्यानंद
श्रद्धा-मात्र लोऽ ये देन परम-आनंद ।।६।।

एक बार देखले चखे जल
'गौर' बोले निताइ देन सकल सम्बल ।।७।।

देन शुद्ध कृष्ण शिक्षा,
जाती, धन, बिद्या, बल ना कोरे अपेक्षा ।।८।।

अमनी छाडेऽ माया-जाल
गृहे थाको, बने थाको, ना थाके जंजाल ।।९।।

आर नैको कलिर् भोय
आचण्डाले देन नाम निताइ दोया-मोय ।।१०।।

भकति विनोद डाकिऽ कोय
निताई-चरण बिन आर नाही आश्रोय ।।११।।

* * * * * *

मम मन मंदिर

मम मन मंदिरे रहो निसिदिन
कृष्ण मुरारी श्री कृष्ण मुरारी ।।१।।
भक्ति प्रिती माला चंदन
तुमी निओ हे निओ चितो नंदन ।।२।।
जीवन मरण तोर पुजा निवेदन
सुंदर हे मन हारी ।।३।।
एसो नंद कुमार आर नंद कुमार
होबे प्रेम प्रदिपे आरोतिक तोमार ।।४।।
नयने यमुना जरे अनिबर
तोमार विरहे गिरिधारी ।।५।।
बंदन गने तोब बजुक जीवन
कृष्ण मुरारी श्री कृष्ण मुरारी ।।६।।

* * * * * *

आमी जमुना पुलिने

आमी जमुना पुलिने, कदम्ब कानने
कि हेविमी सखी आज ।।१।।
आमार श्याम बन्सीधारी मनी वांछा परी
लीला कोरे रसराज ।।२।।

तार अष्टोदल परी श्री राधा श्री हरी
अष्टोसखी परी जन ।।३।।
तार सुगित नत्तने, सब सखी गणे
तु रिछछे जुगल धने ।।४।।
तखन कृष्ण लीला हेरी, प्रकृती सुंदरी
विस्तरिछे शोभ वने ।।५।।
आमी घरे नजैव वने प्रबेशिबे
ओ लीला रसेर तारे ।।६।।
आमी तोजी कुललाज भज ब्रज-राज
विनोदे मिनतीकोरे ।।७।।

* * * * * *

श्रीकृष्ण कीर्तने

श्री-कृष्ण-कीर्तने जदी मानस तोहार
परम जतने ताही लभो अधिकार ।।१।।
तृणाधिक हीन, दीन, अकिंचन छार
आपने मानोबी सदा छाडीऽ अहंकार ।।२।।
बृक-सम खमा-गुण कोरोबी साधन
प्रतिहिंसा त्याजीऽ अन्ये कोरोबी पालन ।।३।।
जीबन-निर्बाहे आने उद्‌बेग ना दिबे
पर-उपकारे निज-सुख पासरिबे ।।४।।
होइले-ओ सर्ब-गुणे-गुणी महाशोय
प्रतिष्ठाशा छाडी कोरो अमानी हृदोय ।।५।।
कृष्ण-अभिष्ठान सर्ब-जीबे जानीऽ सदा
कोरोबी सम्मान सबे आदरे सर्बदा ।।६।।
दैन्य, दोया, अन्ये मान, प्रतिष्ठा-बर्जन
चारी गुणे गुणी होइ, कोरोह कीर्तन ।।७।।
भकतिविनोद कदीऽ बले प्रभु-पाय
हेनो अधिकार कबे दिबे हे आमाय ।।८।।

* * * * * *

अनादि कर्म फले

अनादि कर्म-फले, पोडी भवार्णव-जले,
तोरिबारे ना देखी उपाय
ए-विषय-हलाहले, दिबा निशि हिया ज्वले
मन कभु सुख नाही पाय ।।१।।
आशा-पाश-शत-शत क्लेश देय अभिरत
प्रबृत्ती-ऊर्मिर ताहे खेला
काम-क्रोध-आदि छोय, बाटपाडे देय भोय,
अबसान होइलो आसीऽ बेला ।।२।।
ज्ञान-कर्म-ठग दुइ, मोरे प्रतारिया लोइ,
अबशेष फेले सिंधु-जले
ए होनो समये, बंधु, तुमी कृष्ण कृपा-सिंधु
कृपा कोरी तोलो मोर बले ।।३।।
पतित-किंकोरे धोरीऽ, पाद-पद्म-धूली कोरी,
देहो भकतिविनोदे आश्रोय
आमी तब नित्य-दास, भूलिया मायार पाश
बद्ध होऽ ये आछी दोयामोय ।।४।।

* * * * *

दोयाल निताई चैतन्य

दोयाल निताई चैतन्य बोलेऽ नाच रे आमार मन
नाच रे आमार मन, नाच रे आमार मन ।।१।।

(एमोन, दोयाल तो नाइ हे, मर खेये प्रेम देय)
(ओर) अपराध दूर जाबे, पाऽबे प्रेम-धन
(ओ नामे अपराध-बिचार तो नाइ हे)
(तखोन) कृष्ण-नामे रुची हऽबे, घुचिबे बंधन ।।२।।

(कृष्ण-नामे अनुराग तो हऽबे हे)
(तखोन) अनायासे सफल हऽबे जीबेर जीबन
(कृष्ण-रती बिना जीबन तो मिछे हे)
(शेष) बृंदाबने राधा-श्यामेर पाऽबे दर्शन
(गौर-कृपा हऽले हे) ।।३।।

* * * * *

श्री नगर-कीर्तन

नदीया-गोद्रमे नित्यानंद महाजन
पतियाछे नाम-हट्ट जीबेर कारण ।।१।।

(श्रद्धावान जन हे, श्रद्धावान जन हे)
प्रभुर आज्ञाय, भाई, मागी एइ भिक्षा
बोलो 'कृष्ण', भजो कृष्ण, कोरो कृष्ण-शिक्षा ।।२।।

अपराध-शून्य होऽ ये लोह कृष्ण-नाम
कृष्ण माता, कृष्ण पिता, कृष्ण धन प्राण ।।३।।

कृष्णेर सम्सार कोरो छाडी अनाचार
जीबे दोया, कृष्ण-नाम-सर्ब-धर्म-सार ।।४।।

* * * * * *

दैन्य

भूलिया-तोमारे, सोम्सारे आसिया, पेये नाना-बिध व्यथा
तोमार चरणे, आसियाछी आमी बोलिबो दुःखेर कथा ।।१।।

जननी-जठरे, छिलाम जखोन बिषम बंधन-पाशे
एक बार प्रभु ! देखा दिया मोरे बोंचिले ए दीन दासे ।।२।।

तखोन भाविनु जनम पाइया, कोरिबो भजन तब
जनम होइलो, पोडि माया-जाले ना होइलो जान-लब ।।३।।

आधरेर छेले, स्वजनेर कोले हासिया काटानु काल
जनक-जननी स्नेहेते भुलिया सोम्सार लागिलो भालो ।।४।।

कर्मे दिन दिन, बालक होयि, खेलिनु बालक-सह
आर किछु दिने, ज्ञान उपजिलो, पाथ पोडि अहर-अहः ।।५।।

बिद्यार गौरवे, भ्रोमिऽ देशे देशे, धन उपार्जन कोरि
स्वजन पालन, कोरि एक-मने, भुलिनु तोमारे, हरि ! ।।६।।

बार्धक्ये एखोन भकतिविनोद, कांदिया कातर अति
ना भोजिया तोरे, दिन बृथा गेलो एखोन कि हबे गति ।।७।।

* * * * * *

आमार जीवन

आमार जीवन, सदा पापे रत नाहिको पुण्येर लेश
परेरे उद्वेग, दियाछि जे कतो दियाछि जीबेर क्लेश ।।१।।

निज सुखलागिऽ पापे नाहि डोरि, दोया-हीन स्वार्थ-परो
पर-सुखे दुःखी, सदा मिथ्या भाषी, पर दुःख सुख-करो ।।२।।

अशेष कामना, हृदि माझें मोर, क्रोधी, दम्भ-परायण
मद-मत्त सदा, बिषये मोहित, हिम्सा, सर्व विभूषण ।।३।।

निद्रालस्य हात, सुकार्जे बिरत, अकार्जे उद्योगी आमि
प्रतिष्ठा लागिया शाठ्य-आचरण, लोभ-हत-सदा कामी।।४।।

ए हेनो दुर्जन, सज्जन-बर्जित अपराधि निरंतर
शुभ-कार्ज-शून्य, सदानर्थ-मनः नाना दुःखे जर जर ।।५।।

बार्धक्ये एखोन, उपाय बिहीन, ताऽते-दीन अकिंचन
भकतिविनोद प्रभुर चरणे करे दुःख निबेदन ।।६।।

* * * * * *

आत्मनिवेदन, तुया पदे

आत्मन्निवेदन, तुया पदे करि, हइनु परम सुखी ।
दुःख दूरे गेल, चिन्ता ना रहिल, चौदिके आनन्द देखि ।।१।।

अशोक-अभय, अमृत-आधार, तोमार चरणद्वय ।
ताहाते एखन, विश्राम लाभिया, छाडिनु भवेर भय ।।२।।

तोमार संसारे, करिव सेवन, नहिव फलेर भागी ।
तव सुख याहे, करिव यतन, ह ये पदे अनुरागी ।।३।।

तोमार सेवाय, दुःख हय यत, सेओ त परम सुख ।
सेवा-सुख-दुखःख, परम सम्पद, नाशये अविद्या-दुःख ।।४।।

पूर्व इतिहास, भुलिनु सकल, सेवा-सुख-पेये मने ।
आमि त तोमार, तुमि त आमार, कि काज अपर धने ।।५।।

भक्तिविनोद, आनन्दे डुबिया, तोमार सेवार तरे
सब चेष्टा करे, तव इच्छा-मत, थाकिया तोमार घरे ।।६।।

* * * * * *

श्रीगौर-तत्त्व

(प्रभू हे) ! एमन दुर्मति, संसार-भितरे, पडिया आछिनु आमि ।
तव निज-जन, कोन महाजने, पाठाइया दिले तुमि ।।१।।

दया करि मोरे, पतित देखिया, कहिल आमारे गिया ।
ओहे दीन जन, सुन भाल कथा, उल्लसित हबे हिया ।।२।।

तोमारे तारिते, श्रीकृष्ण चैतन्य, नवद्वीपे अवतार ।
तोमा हेन कत, दीन हीन जने, करिलेन भवपार ।।३।।

वेदेर प्रतिज्ञा, राखिबार तरे, रुक्मवर्ण विप्रसूत ।
महाप्रभु नामे, नदीया माताय, संगे भाई अवधूत ।।४।।

नंदसुत जिनि, चैतन्य गोसाई, निज-नाम करि दान ।
तारिल जगत् तुमिओ जाइया, लह निज परित्राण ।।५।।

से कथा सुनिया, आसियाछि नाथ, तोमार चरणतले ।
भकति विनोद, काँदिया काँदिया, आपन काहिनी बले ।।६।।

* * * * * *

हरि हे ! प्रपञ्चे पडिया

हरि हे !
प्रपञ्चे पडिया, अगति हइया, ना देखि उपाय आर ।
अगतिर गति, चरणे शरण, तोमाय करिनु सार ।।१।।

करम गेयान, किछु नाहि मोर, साधन भजन नाइ ।
तुमि कृपामय, आमि त कांगाल, अहैतुकी कृपा चाइ ।।२।।

वाक्य-मनो-वेग, क्रोध-जिह्वा-वेग, उदर-उपस्थ-वेग ।
मिलिया ए सब, संसारे भासाये, दितेछे परमोद्वेग ।।३।।

अनेक यतने, से सब दमने, छाडियाछि आशा आमि ।
अनाथेर नाथ ! डाकि तव नाम, एखन भरसा तुमि ।।४।।

* * * * * *

आर केन मायाजाले

आर केन मायाजाले पडितेछ जीव मीन ।
नाहि जान बद्ध ह ये खे तुमि चिरदिन ।।

अति तुच्छ भोग-आशे, बन्दि ह ये माया-पाशे ।
रहिले विकृत भावे दण्ड्य यथा पराधीन ।।

एखन ओ भक्ति बले कृष्ण प्रेम सिन्धु जले ।
क्रीडा करि अनायासे थाक तुमि कृष्णाधीन ।।

* * * * * *

कृपा कर वैष्णव ठाकूर

कृपा कर वैष्णव ठाकुर ।
सम्बन्ध जानिया, भजिते-भजिते, अभिमान हउ दूर ।।१।।

'आमि त' वैष्णव, ए बुद्धि हइले, अमानी ना ह ब आमि ।
प्रतिष्ठाशा आसि, हृदय दूषिबे, हइब निरयगामी ।।२।।
तोमार किङ्कर, आपने जानिब, गुरु अभिमान त्यजि ।
तोमार उच्छिष्ट, पदजलरेणु, सदा निष्कपटे भजि ।।३।।

निजे श्रेष्ठ जानि, उच्छिष्टादि दाने, ह बे अभिमान भार ।
ताइ शिष्य तव, थाकिया सर्वदा, ना लइब पूजा का र ।।४।।

अमानी मानद, हइले कीर्तने, अधिकार दिबे तुमि ।
तोमार चरणे, निष्कपटे आमि, काँदिया लुटिब भूमि ।।५।।

* * * * * *

कबे मुइ वैष्णव चिनिब

कबे मुइ वैष्णव चिनिब हरि-हरि ।
वैष्णव-चरण, कल्याणेर खनि, मातिब हृदये धरि ।।१।।

वैष्णव ठाकुर, अप्राकृत सदा, निर्दोष, आनन्दमय ।
कृष्णनामे प्रीत, जडे उदासीन, जीवेते दयार्द्र हय ।।२।।

अभिमान हीन, भजने प्रवीण, विषयेते अनासक्त ।
अन्तर-बाहिरे, निष्कपट सदा, नित्यलीला अनुरक्त ।।३।।

कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम प्रभेदे, वैष्णव त्रिविध गणि ।
कनिष्ठे आदर, मध्यमे प्रणति, उत्तमे शुश्रुषा शुनि ।।४।।

ये येन वैष्णव, चिनिया लइया, आदर करिब यबे ।
वैष्णवेर कृपा, याहे सर्वसिद्धि, अवश्य पाइब तबे ।।५।।

वैष्णव चरित्र, सर्वदा पवित्र, येइ निन्दे हिंसा करि ।
भकतिविनोद, ना सम्भाषे तारे, थाके सदा मौन धरि ।।६।।

* * * * * *

हरि-हरि कबे मोर

हरि-हरि कबे मोर ह बे हेन दिन ।
विमल वैष्णवे, रति उपजिवे, वासना हइबे क्षीण ।।१।।

अन्तर-बाहिरे, सम व्यवहार, अमानी मानद ह ब ।
कृष्ण-संकीर्तने, श्रीकृष्ण-स्मरणे, सतत मजिया र ब ।।२।।

ए देहेर क्रिया, अभ्यासे करिब, जीवन यापन लागि ।
श्रीकृष्ण भजने, अनुकूल याहा, ताहे ह ब अनुरागी ।।३।।

भजनेर याहा, प्रतिकूल ताहा, दृढभावे तेयागिव ।
भजिते-भजिते, समय आसिले, ए देह छाडिया दिब ।।४।।

भक्तिविनोद, एइ आशा करि, वसिया गोद्रुमवने ।
प्रभु-कृपा लागि, व्याकुल अन्तरे, सदा काँदे संगोपने ।।५।।

* * * * * *

कबे ह बे हेन दशा मोर

कबे ह बे हेन दशा मोर ।
त्यजि जड आशा, विविध बन्धन, छाडिव संसार घोर ।।१।।

वृन्दावनभेदे, नवद्वीप-धामे, बाँधिव कुटीरखानि ।
शचीर नन्दन, चरण आश्रय, करिब सम्बन्ध मानि ।।२।।

जाह्नवी-पुलिने, चिन्मयकानने, बसिया विजय स्थले ।
कृष्णनामामृत, निरन्तर पिब, डाकिब गौराङ्ग ब ले ।।३।।

हा गौर निताई, तोरा दुटी भाइ, पतितजनेर बन्धु ।
अधम पतित, आमि हे दुर्जन, हओ मोरे कृपासिन्धु ।।४।।

काँदिते-काँदिते, षोलक्रोश-धाम, जाह्नवी उभयकूले ।
भ्रमिते-भ्रमिते, कभु भाग्यफले, देखि किछु तरुमूले ।।५।।

हा हा मनोहर, कि देखिनु आमि, बलिया मूर्च्छित ह ब ।
संवित पाइया, काँदिब गोपने, स्मरि दुंहु कृपालव ।।६।।

श्रीयुगल-आरती

जय जय राधाकृष्ण युगल-मिलन
आरति करये ललितादि सखीगण ।।१।।

मदन-मोहन रूप त्रिभङ्ग सुन्दर ।
पीताम्बर शिखिपुच्छ चूडा मनोहर ।।२।।

ललित माधव-वामे वृषभानु कन्या ।
नील-वसना गौरी रूपे गुणे धन्या ।।३।।

नानाविध अलंकार करे झलमल ।
हरिमन-विमोहन वदन उज्ज्वल ।।४।।

विशाखादि सखीजन नाना रागे गाय ।
प्रियनर्म सखीजत चामर ढुलाय ।।५।।

श्रीराधा-माधव-पद सरसिज आशे ।
भकतिविनोद सखी, पदे सुखे भासे ।।६।।

* * * * * *

ओरे मन !

ओरे मन, भाल नाहि लागे ए संसार ।
जन्म-मरण जरा, ये संसारे आछे भरा,
ताहे किबा आछे बल सार ।।
धन-जन परिवार, केह नहे कभु कार,
काले मित्र, अकाले अपर ।
याहा राखिवारे चाइ, ताहा नाहि थाके भाई,
अनित्य समस्त विनश्वर ।।
आयु अति अल्पदिन, क्रमे ताहा हय क्षीण,
शमनेर निकट दर्शन ।
रोग-शोक अनिवार, चित्त करे छारखार,
बांधव वियोग दुर्घटन ।।
भाल क रे देख भाई, अमिश्र आनन्द नाइ,
ये आछे से दुःखेर कारण ।
से सुखेर तरे तवे, केन माया दास ह बे,
हाराइवे परमार्थ धन ।।

इतिहास आलोचने, भेवे देख निज मने,
कत आसुरिक दुराशय ।
इन्द्रियतर्पण सार, करि कत दुराचार,
शेषे लभे मरण निश्चय ।।

मरण समय ता रा, उपाय हइया हारा,
अनुताप अनले ज्वलिल ।
कुक्कुरादि पशू प्राय, जीवन काटाय हाय,
परमार्थ कभुना चिन्तिल ।।

एमन विषये मन, केन थाक अचेतन,
छाड-छाड विषयेर आशा ।
श्रीगुरु चरणाश्रय, कर सबे भवजय,
ए दासेर सेइ त भरसा ।।

* * * * * *

दुर्लभ मानव जनम

दुर्लभ मानव-जनम लभिया संसारे ।
कृष्ण ना भजिनु - दुःख कहिबो काहाँरे ? ।।१।।

'संसार' 'संसार', को रे मिछे गेलो काल ।
लाभ ना कोइलो किछु, घटिलो जंजाल ।।२।।

किसेर संसार एइ छायाबाजि प्राय ।
इहाते ममता कोरि वृथा दिन जाय ।।३।।

ए देह पतन हो ले कि रो बे आमार ? ।
केहो सुख नाहि दिबे पुत्र-परिवार ।।४।।

गर्दभेर मत आमि कोरि परिश्रम ।
का र लागि एतो कोरि, ना घुचिलो भ्रम ।।५।।

दिन जाय मिछ काजे, निशा निद्रा-बाशे ।
नाहि भावि - मरण निकटे आछे बो से ।।६।।

भालो मन्द खाइ, हेरि, परि, चिन्ता-हीन ।
नाहि भावि, ए देहो छाडिबो कोन दिन ।।७।।

देहो-गेहो-कलत्रादि-चिन्ता अविरत ।
जागिछे हृदये मोर बुद्धि कोरि हत ।।८।।

हाय, हाय ! नाहि भावि – अनित्य ए सब ।
जीवन विगते कोथा रोहिबे वैभव ? ।।९।।

स्मशाने शरीर मम पडिया रोहिबे ।
बिहंग–पतंग ताय बिहार कोरिबे ।।१०।।

कुक्कुर सृगाल सब आनन्दित ह य ।
महोत्सव करिबे आमार देह ल य ।।११।।

जे देहेर एइ गति, ताँ र अनुगत ।
संसार–वैभव आर बंधु–जन जत ।।१२।।

अतएव माया–मोह छाडि बुद्धिमान ।
नित्य–तत्त्व कृष्ण–भक्ति करुन संधान ।।१३।।

* * * * * *

केनो हरे कृष्ण नाम

केनो हरे कृष्ण नाम हरि बोले
मनो प्राण काँदे ना ।।धृ।।

पक्षि ना जानि कोन अपराधे
मुखे हरे कृष्ण नाम बोलो ना ।।१।।

बनेर पक्षि रे धरे राक्लाम हृदय मन्दिरे
मधु माखा एइ हरि नाम
पक्षि रे शिखैले शिखे ।।२।।

पक्षि सकल नाम बोल्ते परो
केनो हरे कृष्ण नाम बोलो ना
केनो हरे कृष्ण नाम हरि बोले मनो प्राण काँदे ना ।।३।।

छलो पक्षि रूपेर देशे जाइ
जे देशेते मनेर मानुष आसा जाओया नाइ ।।४।।

पक्षि रे तोर मरण कालेते, चरबि वासेर दोलाते
ओरे चार जनेते काँधे कोरे, लोये जाबे स्मशन घाटेते ।।५।।

ओरे तोर मुख आगुण जिह्वे तुले
कि कोरोबि ताइ बोलो ना ।।६।।

* * * * * *

निताई नाम हाटे

(श्रीगोद्रुम कल्पतावी)

निताई नाम हाटे, ओ ! के जाबिरे भाइ, आय छुटे ।
एशे पाषण्ड जगाई माधाई दु-जन सकल हाटेर माल निले जुटे ।।१।।

हाटेर अंशी महाजन, श्रीअद्वैता, सनातन ।
भंडारी श्रीगदाधर पण्डित विचक्षुन ।।२।।

आछेन चौकिदार हरिदास आदि हलेन श्रीसञ्जय
श्रीश्रीधर माते दालाल केशव भारति, श्री विद्या वाचस्पति ।
परिचारक आछेन कृष्णदास प्रभृति
होन कोषाध्यक्ष श्रीवास पण्डित, झाडुदार केदार जुते ।।३।।

हाटेर मूल्य निरूपण, नयभक्ति प्रकाशन ।
प्रेम हेनो मुद्रा सर्वसार, संयमन नाइ कामी बेशी समान ।।४।।

ओ, जन रे, सब एतो मने बोझाय उठे
एइ प्रेमेर उद्देश, एक साधु उपदेश ।
साधा-मय हरिनाम रूप सु-सन्देश
एते बरो नाइ रे द्वेशाद्वेश
खाय एक पाते कानु-कुठे ।।५।।

* * * * * *

कबे श्रीचैतन्य मोरे करिबेन दया

(कल्याण कल्पतरु)

कबे श्रीचैतन्य मोरे करिबेन दया ।
कबे आमि पाइबो वैष्णव-पद-छाया ।।१।।

कबे आमि छाडिबो एइ विषयाभिमान ।
कबे विष्णुजने आमि करिबो सम्मान ।।२।।

गल-वस्त्र कृताञ्जलि वैष्णव-निकटे ।
दन्ते तृण करि दाण्डाइबो निष्कपटे ।।३।।

काँदिया काँदिया जानाइबो दुःख-ग्राम।
संसार-अनल हइते मागिबो विश्राम ।।४।।

शूनिया आमार दुःख वैष्णव ठाकुर ।
आमा लागि कृष्णे आवेदिबेन प्रचुर ।।५।।

वैष्णवेर आवेदने कृष्ण दयामय ।
ए हेन पामर प्रति ह बेन सदय ।।६।।

विनोदेर निवेदन वैष्णव-चरणे ।
कृपा करि सङ्गे लह एइ अकिञ्चने ।।७।।

* * * * * *

कलि कुक्कुर कदन

(कल्याण कल्पतरु)

कलि-कुकर-कदन जदि चाओ (हे)
कलि-युग-पावन, कलि-भय-नाशन,
श्रीसचीनन्दन गाओ (हे) ।।१।।

गदाधर-मादन, निता येर प्राण-धन,
अद्वैतेर प्रपुजित गोरा
निमाई विश्वम्भर, श्रीनिवास-ईश्वर,
भक्त-समूह-चित्-चोर ।।२।।

नादीया-शशधर, मायापूर-ईश्वर
नाम-प्रवर्तन सुर
गृहि-जन-शिक्षक, न्यासि-कुल-नायक,
माधव राधा-भाव-पूर ।।३।।

सार्वभौम-शोधन, गजपति-तारण,
रामानन्द-पोषण वीर
रूपानन्द-वर्धन, सनातन-पालन,
हरिदास-मोदन धीर ।।४।।

व्रज-रस भावन, दुष्ट-मत-शातन.
कपटी विघातन काम
शुद्ध-भक्त पालन, शुष्क-ज्ञान ताडन,
छल-भक्ति-दुषण राम ।।५।।

* * * * * *

एखोन बुझिनू प्रभू

(शरणागती)

एखोन बुझिनू प्रभू ! तोमार चरण ।
अशोकाभयामृत-पूर्ण सर्व-खण ।।१।।

सकल छाडिया तुआ चरण-कमले ।
पडियाचि आमि नाथ ! तव पद-तले ।।२।।

तव पाद-पद्म नाथ ! रखिबे आमारे ।
आर राखा-कर्ता नाहि ए भव-संसारे ।।३।।

आमि तव नित्य-दास - जानिनु ए-बार ।
आमार पालन-भार एखन तोमार ।।४।।

बड दुःख पाइयाचि स्वतन्त्र जीवने ।
दुःख दूरे गेलो ओ पद-वरणे ।।५।।

जे पद लागिया रमा तपस्या करिला ।
जे-पद पाइया शिव शिवत्व लभिला ।।६।।

जे-पद लभिया ब्रह्मा कृतार्थ होइला ।
जे-पद नारद मुनि हृदये धरिला ।।७।।

सेइ से अभय पद शिरेते धरिया ।
परम-आनन्दे नाचि पद-गुण गाइया ।।८।।

संसार-विपद होइते अविश्य उद्धार ।
भकतिविनोद, ओ-पद करिबे तोमार ।।९।।

* * * * * *

प्रभु तव पद-युगे

(गितावली)

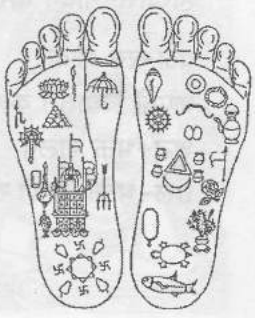

प्रभु तव पद-युगे मोर निवेदन ।
नाहि मागि देहसुख, विद्या, धन, जन ।।१।।

नाहि मागि स्वर्ग, आर मोक्ष नाहि मागि ।
ना कोरि प्रार्थना कोनो विभूतीर लागि ।।२।।

निजकर्म-गुणदोषे जे जे जन्म पाय ।
जन्मे जन्मे जेनो तव नामगुण गाय ।।३।।

एइ मात्र आशा मम तोमार चरणे ।
अहैतुकी भक्ति हृदे जागे अनुक्षणे ।।४।।

विषये जे प्रीती एबे आछ्ये आमार ।
सेइ-मत प्रीती हौक चरणे तोमार ।।५।।

विपदे सम्पदे ताँहा ठाकुक सम-भावे ।
दिने दिने वृद्धि हौक नामेर प्रभावे ।।६।।

पशु-पक्षी ह ये ठाकि स्वर्गे वा निरये ।
तव भक्ति रहु भक्तिविनोद-हृदये ।।७।।

* * * * * *

सर्वस्व तोमार चरणे

(शरणागती)

सर्वस्व तोमार, चरणे सम्पिया, पडेचि तोमार घरे ।
तुमि तो ठाकुर, तोमार कुक्कुर, बोलिया जानहो मोरे ।।१।।

बान्धिया निकटे, आमारे पालिबे, रोहिबो तोमार द्वारे ।
प्रतीप-जनेरे, आसिते ना दिबो, राखिबो गडेर पारे ।।२।।

तव निजजन, प्रसाद सेविया, उच्छिष्ट राखिबे जाँहा ।
आमार भोजन, परम-आनन्दे, प्रतिदिन ह बे ताँहा ।।३।।

बोसिया शुइया, तोमार चरण, चिन्तिबो सतत आमि ।
नाचिते नाचिते, निकटे जाइबो, जखोन डाकिबे तुमि ।।४।।

निजेर पोषण, कभु ना भाविबो, रहिबो भावेर भोरे ।
भकतिविनोद, तोमारे पालक, बोलिया वरण करे ।।५।।

* * * * * *

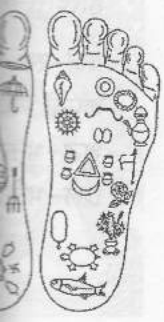

श्री नरोत्तमदास ठाकुर विरचित प्रार्थना

वैष्णव विज्ञप्ति

एइ-बारो करुणा कोरो वैष्णव गोसाइ
पतित-पावन तोमा बिने केहो नाइ ।।१।।

जॉहार निकटे गेले पाप दूरे जाय
एमोन दोयाल प्रभु केबा कोथा पाय ।।२।।

गंगार परश होइले पश्चाते पावन
दर्शने पवित्र कोरो-एई तोमार गुण ।।३।।

हरि-स्थाने अपराधे तारे हरि-नाम
तोमा स्थाने अपराधे नाहि परित्राण ।।४।।

तोमार हृदोये सदा गोविंद-विश्राम
गोविंद कोहेन-मोर वैष्णव पराण ।।५।।

प्रति जन्मे कोरि आशा चरणेर धूलि
नरोत्तमे कोरो दोया आपनार बोलिऽ ।।६।।

* * * * * *

इष्ट देवे विज्ञप्ति

हरि हरि ! बिफले जनम गोनाइनु
मनुष्य-जनम पाइया, राधा-कृष्ण ना भजिया,
जानिया शुनिया बिष खाइनु ।।१।।

गोलोकेर प्रेम-धन, हरि-नाम-संकीर्तन,
रति ना जन्मिलो केने ताय
सम्सार-विषानले, दिबा-निशि हिया ज्वले,
जुडाइते ना कोइनु उपाय ।।२।।

ब्रजेंद्र-नंदन जेइ, सची-सुत होइलो सेइ
बलराम होइलो निताई
दीन-हीन जत छिलो, हरिनामे उद्धारिलो,
तार साक्षि जगाइ माधाइ ।।३।।

हा हा प्रभु नंद-सुत, वृषभानु-सुता-जुत,
कोरुणा कोरोहो एइ-बारो

नरोत्तमदास कोय, नाठेलिहो रांगा पाय
तोमो बिने के आच्छे आमार ।।४।।

* * * * * *

लालसामयी प्रार्थना

'गौरांग' बोलिते हबे पुलक-शरीर
'हरि हरि' बोलित नयने बऽबे नीर ।।१।।

आर कबे निताइ-चांदेर कोरुणा होइबे
सम्सार-बासना मोर कबे तुच्छा हऽबे ।।२।।

विषय छाडिया कबे शुद्ध हऽबे मन
कबे हाम हेरबो श्री-बृंदाबन ।।३।।

रूप-रघुनाथ-पदे होइबे आकुति
कबे हाम बुझबो से जुगल-पीरिति ।।४।।

रूप-रघुनाथ-पदे रहु मोर आश
प्रार्थना कोरोये सदा नरोत्तमदास ।।५।।

* * * * * *

नाम-संकीर्तन

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः
यादवाय माधवाय केशवाय नमः ।।१।।

गोपाल-गोविंद राम श्री-मधुसूदन
गिरिधार गोपीनाथ मदन-मोहन ।।२।।

श्री-चैतन्य नित्यानंद श्री-अद्वैत सीता
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता ।।३।।

श्री-रूप सनातन भट्ट-रघुनाथ
श्री जीव गोपाल-भट्ट दास-रघुनाथ ।।४।।

एइ छय गोसाइर कोरि चरण वंदन
जाहा होइते बिघ्न-नाश अभीष्ट-पूरण ।।५।।

एइ छय गोसाइ जॉर-मुइ तॉर दास
ता-सबार पद-रेणु मोर पंच-ग्रास ।।६।।

तादेर चरण सेबि-भक्त सने बास
जनम जनमे होय एइ अभिलाष ॥७॥

एइ छय गोसाइ जबे ब्रजे कोइला बास
राधा-कृष्ण-नित्य-लीला कोरिला प्रकाश ॥८॥

आनन्दे बोलो हरि भज-बृंदाबन
श्री-गुरु-वैष्णव पादे मजाइया मन ॥९॥

श्री गुरु वैष्णव पाद पद्म कोरि आश्
नाम-संकीर्तन कोहे नरोत्तम दास ॥१०॥

* * * * * *

सखी-वृंदे विज्ञप्ति

राधा-कृष्ण प्राण मोर जुगल-किशोर
जीवन मरणे गति आरो नाहि मोर ॥१॥

कालिंदीर कूले-केली कदंबेर वन
रतन-बेदीर उपर बोसाबो दुऽजन ॥२॥

श्याम-गौरी अंगे दिबो चंदनेर गंध
चामर ढुलाबो कबे हेरि मुख-चंद्र ॥३॥

गाथिया मालतीर माला दिबो दोहार गले
अधरे तुलिया दिबो कर्पूर-तांबूले ॥४॥

ललिता विशाखा-आदि जत सखी बृंद
आज्ञाय कोरिबो सेबा चरणारविंद ॥५॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य-प्रभुर दासेर अनुदास
सेवा अभिलाष कोरे नरोत्तम-दास ॥६॥

* * * * * *

गौराङ्ग करुणा कर

गौराङ्ग करुणा कर, दीन हीन जने ।
मो-सम पतित प्रभु, नाहि त्रिभुवने ॥१॥

दन्ते तृण धरी गौर, डाकि हे तोमार ।
कृपा करी एसो आमार, हृदय मंदिरे ॥२॥

जदि दया ना करिबे, पतित देखिया ।
पतित पावन नाम, किसेर लागिया ।।३।।

पडेचि भव तुफाने, नाहिक निस्तार ।
श्रीचरण तरणी दाने, दासे कर पार ।।४।।

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु, दासेर अनुदास ।
प्रार्थना करये सदा, नरोत्तम दास ।।५।।

* * * * * *

सपार्षद-भगवद् विरह-जनित-विलाप

जे आनिलो प्रेम-धन कोरुणा प्रचुर
हेना प्रभु कोथा गेला आचार्य-ठाकुर ।।१।।

कहा मोर स्वरूप रूप काहा सनातन
काहा दास रघुनाथ पतित-पावन ।।२।।

काहा मोर भट्ट-जुग काहा कविराज
एक-काले कोथा गेला गोरा नट-राज ।।३।।

पाषाणे कुटिबो माथा अनले पशिबो
गौरांग गुणेर निधि कोथा गेले पाबो ।।४।।

से-सब संगीर संगे जे कोइलो बिलास
से-संग ना पाइया कांदे नरोत्तम दास ।।५।।

* * * * * *

सावरण-श्री-गौर-महिमा

गौरांगेर दुटि पद, जार धन-सम्पद,
से जाने भकति-रस-सार
गौरांगेर मधुर-लीला, जार कर्णे प्रवेशिल,
हृदोय निर्मल भेलो तार ।।१।।

जे गौरांगेर नाम लोय, तार होय प्रेमोदोय
तारे मुइ जाइ बोलिहारि
गौरांग गुणेते झुरे, नित्य लीला तारे स्फुरे
से जन भकति-अधिकारी ।।२।।

गौरांगेर संगी-गणे, नित्य-सिद्ध कोरीऽमाने,
से जाय ब्रजेंद्र-सुत-पाश
श्री गौड-मण्डल भूमि, जेबा जाने चिंतामणि,
तार होय ब्रज-भूमे बास ।।३।।

गौर-प्रेम रसार्णवे, सेतरंगे जेबा दुबे,
से राधा-माधव-अंतरंग
गृहे बा वनेते थाके, 'हा गौरांग' बोऽले डाके
नरोत्तम मागे तार संग ।।४।।

* * * * * *

श्री गुरु वंदना

(श्री भक्ति-चंद्रिका)

श्री गुरु चरण पद्म, केवल-भकति-सद्म
बंदो मुइ सावधान मते
जॉहार प्रसादे भाइ, ए भव तोरिया जाइ
कृष्ण प्राप्ति होय जाहा हऽते ।।१।।

गुरु-मुख-पद्म-वाक्य, चित्तेते कोरिया ऐक्य
आर ना कोरिहो मने आशा
श्री गुरु चरणे रति, एइ से उत्तम गति
जे प्रसाद पुरे सर्व आशा ।।२।।

चक्षु-दान दिलो जेइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ,
दिव्य-ज्ञान हृदे प्रोकाशितो
प्रेम-भक्ति जाहा होइते, अविद्या विनाश जाते,
वेदे गाय जॉहार चरितो ।।३।।

श्री गुरु करुणा-सिंधु, अधम-जनार बंधु,
लोकनाथ लोकेर जीवन
हा हा प्रभु कोरो दोया, देहो मोरे पद-छाया,
एबे जश घुषुक त्रिभुवन ।।४।।

* * * * * *

सावरण श्री-गौर-पाद-पद्मे प्रार्थना

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दोया कोरो मोरे
तोमा बिना के दोयालु जगत सम्सारे ।।१।।

पतित पावन हेतु तव अवतार
मो सम पतित प्रभु ना पाइबे आर ।।२।।

हा हा प्रभु नित्यानंद, प्रेमानंद सुखी
कृपावलोकन कोरो आमि बोडो दुःखी ।।३।।

दोया कोरो सीतापति अद्वैत गोसाई
तव कृपा-बले पाइ चैतन्य निताई ।।४।।

हा हा स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ
भट्ट जुग, श्री जीव हा प्रभु लोकनाथ ।।५।।

दोया कोरो श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास
रामचंद्र संग मांगे नरोत्तम दास ।।६।।

* * * * *

मनः शिक्षा

निताइ-पद-कमल कोटिचंद्र सुशितल,
जे छायाय जगत जुडाय
हेनो निताइ बिनेभाइ, राधाकृष्ण पाइते नाइ
दृढ कोरिऽधरो निताइर पाय ।।१।।

से संबंध नाहि जाऽर् बृथा जन्म गेलो ता ऽर,
सेइ पशु बोडो दुराचार
निताई ना बोलिलो मुखे, मजिलो सम्सारसुखे,
विद्याकुले कि कोरिबे तार ।।२।।

अहंकारे मत्त होइया, निताइ पद पासरिया
असत्येर सत्य कोरि मानि
निताइयेर कोरुणा हबे, ब्रजे राधा कृष्ण पाबे,
धारो निताइ-चरण दुऽ खानि ।।३।।

निताईयर चरण सत्य, ताँहर सेवक नित्य

निताइ-पद सदा कोरो आश
नरोत्तम बोडो दुखि, निताइ मोरे कोरो सुखी
राखो रांगा-चरणेर पाश ।।४।।

* * * * * *

पुनः स्वाभीष्ट लालसा

श्री रूप-मंजरी पद, सेइ मोर संपद,
सेइ मोर भजन-पूजन
सेइ मोर प्राण-धन, सेइ मोर आभरण
सेइ मोर जीवनेर जीवन ।।१।।

सेइ मोर रस-निधि, सेइ मोर वांछा सिद्धि,
सेइ मोर वेदेर धरम
सेइ ब्रत, सेइ तप, सेइ मोर मंत्र-जप,
सेइ मोर धरम-करम ।।२।।

अनुकूल हबे विधि, से-पदे होइबे सिद्धि,
निरखिबो ए-दुइ नयने
से रूप-माधुरी-राशि, प्राण कुवलय-शशी,
प्रफुल्लित हबे निशि दिने ।।३।।

तुवा अदर्शन-अहि, गरले जारलो देही,
चिरो-दिन तापित जीवन
हा हा रूप कोरो दोया, देहो मोरे पद-छाया,
नरोत्तम लोइलो शरण ।।४।।

* * * * * *

वासंती रास

वृंदावन रम्य-स्थान, दिव्य-चिंतामणि-धाम
रतन मंदिर मनोहर
आब्रत कालिंदी-नीरे, राजहंस केलि कोरे
ताहे शोभे कनक-कमल ।।१।।

तार मध्ये हेम-पीठ, अष्ट-दले बेष्टित,
अष्ट-दले प्रधाना नायिका

तार मध्ये रत्नासने, बोसिऽआछेन दुइ-जने,
श्याम-संगे सुंदरी राधिका ।।२।।

ओ-रूप-लावण्य राशि, अमिया पोडिछे खासीऽ
हास्य-परिहास-संभाषणे
नरोत्तम-दास कोय, नित्य लीला सुख-मोय
सदाइ स्फुरुक मोर मने ।।३।।

* * * * * *

धन मोर नित्यानंद

(प्रार्थना)

धन मोर नित्यानंद, पति मोर गौरचंद्र,
प्राण मोर युगल-किशोर ।
अद्वैत आचार्य बल, गदाधर मोर कुल,
नरहरी विलास-एइ मोर ।।१।।

वैष्णवेर पद-धूलि, ताहे मोर स्नान केलि,
तर्पण मोर वैष्णवेर नाम ।
विचार कोरिया मने, भक्ति-रस आस्वादने,
मध्यस्थ श्रीभागवत पुराण ।।२।।

वैष्णवेर उच्छिष्ट ताहे मोर मन निष्ठा,
वैष्णवेर नामेते उल्लास ।
वृंदावने चबुतारा, ताहे मोर मन घेरा,
कहे दीन नरोत्तम दास ।।३।।

* * * * * *

गोरा पहुँ

(प्रार्थना)

गोरा पहुँ ना भजिया मैनु ।
प्रेम-रतन-धन हेलाय हाराइनु ।।१।।

अधने जतन करि धन तेयागिनु ।
आपन करम-दोषे आपनि डुबिनु ।।२।।

सत्-संग छाडि कैनु असते विलास ।

ते-कारणे लागिल जे कर्म-बंध-फाँस ।।३।।

विषय-विषम-विष सतत खाइनु ।
गौर-कीर्तन-रसे मगन ना हइनु ।।४।।

केनो वा आछये प्राण कि सुख पाइया ।
नरोत्तम दास केनो ना गेलो मारिया ।।५।।

* * * * * *

शुनियाछि साधु मुखे

शुनियाछि साधु मुखे बले सर्वजन ।
श्रीरूप कृपाय मिले युगल चरण ।।१।।

हा ! हा ! प्रभु सनातन गौर परिवार ।
सबे मिलि वांच्छा पूर्ण करह आमार ।।२।।

श्रीरूपेर कृपा येन आमार प्रति हय ।
से पद आश्रय यार, सेई महाशय ।।३।।

प्रभु लोकनाथ कबे संगे लइया याबे ।
श्रीरूपेर पादपद्मे मोरे समर्पिबे ।।४।।

हेन कि हइबे मोर-नर्म सखीगणे ।
अनुगत नरोत्तमे करिबे शासने ।।५।।

* * * * * *

जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्द

जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्द।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर भक्तवृन्द ।।१।।

कृपा करि सबे मेलि करह करुणा ।
अधम पतित जने ना करिह घृणा ।।२।।

ए तिन संसार-माझे तुया पदसार।
भाविया देखिनु मने-गति नाहि आर ।।३।।

से पद पावार आशे खेद उठे मने ।
व्याकुल हृदय सदा करिये क्रन्दने ।।४।।

कि रूपे पाइव किछु ना पाइ सन्धान।
प्रभु-लोकनाथ पद नाहिक स्मरण ।।५।।

तुमि त दयाल प्रभु ! चाह एकबार ।
नरोत्तम हृदयेर घुचाओ अन्धकार ।।६।।

* * * * * *

कि रूपे पाइव सेवा

कि रूपे पाइव सेवा मुइ दुराचार।
श्रीगुरू वैष्णवे रति ना हैल आमार ।।१।।

अशेष मायाते मन मगन हइल।
वैष्णवेते लेश मात्र रति ना जन्मिल ।।२।।

विषये भुलिया अन्ध हैनु दिवानिशि।
गले फांस दिते फिरे माया से पिशाची।।३।।

इहारे करिया जय छाडान ना याय।
साधु कृपा बिना आर नाहिक उपाय ।।४।।

अदोषदर्शी-प्रभु पतित उद्धार ।
एइबार नरोत्तमे करह निस्तार ।।५।।

* * * * * *

कुसुमित वृंदावने नाचती सखिगणे

(प्रार्थना)

कुसुमित वृंदावने, नाचतो सखिगणे,
पिक-कुल भ्रमर-झाँकारे।
प्रिय सहचरी संगे, गाइया जाइबो रंगे,
मनोहर निंकुज-कुटीरे ।।१।।

हरि हरि ! मनोरथ फलिबे आमारे,
दुंहुक मंथर गति, कौतुके हेरबो अति,
अंग भोरि पुलक अंकुरे ।।२।।

चौदिगे सखीर माझे, राधिकार इंगिते,
चिरुणी लाइया करे कोरि ।

geetasaar.com

कुटिल कुंतल सब, बिथारिया आंचडिबो,
बनाइबो विचित्र कबरी ।।३।।

मृगमद, मलयज, सब अंगे लेपिबो,
पराइबो मनोहर हार।
चंदन कुंकुमे, तिलक बसाइबो,
हेरबो मुख-सुधाकर ।।४।।

नील पट्टांबर, जतने पराइबो,
पाये दिबो रतन मंजीरे।
भृंगारेर जले रांगा, चरण धोयाइबो,
मुछबो आपन चिकुरे ।।५।।

कुसुमक नव-दले, शेज बिछाइबो,
शयन कराबो दोंहाकारे।
धवल चामर आनि, मृदु मृदु बीजबो,
छरमित दुंहुक शरीरे ।।६।।

कनक संपुट कोरि, कर्पूर तांबुल भरि,
जोगाइबो दोंहार वदने।
अधर सुधा-रसे, तांबुल सुवासे,
भुंजबो अधिक जतने ।।७।।

श्रीगुरु करुणासिंधु, लोकनाथ दीन-बंधु,
मुइ दीने कर अवधान।
राधाकृष्ण वृंदावन, प्रिय-नर्म-सखीगण,
नरोत्तम मागे एइ दान ।।८।।

* * * * * *

ठाकुर वैष्णवगण

ठाकुर वैष्णवगण ! करि एइ निवेदन,
मो बड अधम दुराचार।
दारुण-संसार निधि, ताहे डुबाइल विधि,
केशे धरि मोरे कर पार ।।१।।

विधि बड बलवान, ना शुने धरम-ज्ञान,
सदाइ करम पाशे बांधे।

ना देखि तारण लेश, यत देखि सब क्लेश,
अनाथ, कातरे तेञि काँदे ।।२।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अभिमान सह,
आपन-आपन स्थाने टाने।
ऐछन आमार मन, फिरे येन अंधजन,
सुपथ विपथ नाहि जाने ।।३।।

ना लइनु सत मत, असते मजिल चित,
तुया पाये ना करिनु आश ।
नरोत्तमदासे कय, देखि शुनि लागे भय,
तराइया लह निज पाश ।।४।।

* * * * * *

ठाकुर वैष्णव पद

ठाकुर वैष्णव पद, अवनीर सुसम्पद,
शुन भाई, हञा एक मन।
आश्रय लइया भजे, ता रे कृष्ण नाहि त्यजे,
आर सब मरे अकारण ।।१।।

वैष्णव चरण जल, प्रेमभक्ति दिते बल,
आर केह नहे बलवन्त।
वैष्णव-चरण-रेणु, मस्तके भूषण बिनु,
आर नाहि भूषणेर अंत ।।२।।

तीर्थजल पवित्र-गुणे, लिखियाछे पुराणे,
से सब भक्तिर प्रवन्चन।
वैष्णवेर पादोदक, सम नहे एइ सब,
जाते हय वांच्छित पूरण ।।३।।

वैष्णव-संगेते मन, आनन्दित अनुक्षण,
सदा हय कृष्ण परसंग।
दीन नरोत्तम काँदे, हिया धैर्य नाहि बांधे,
मोर दशा केन हैल भंग ।।४।।

* * * * * *

आरे भाई ! भज मोर गौराङ्गचरण

आरे भाई ! भज मोर गौराङ्गचरण
ना भजिया मैनु दुःखे, डुबि गृह-विष कूपे,
दग्ध कैल ए पाँच पराण ।।१।।

तापत्रय-विषानले, अहर्निशि हियाजले,
देह सदा हय अचेतन।
रिपुवश इंद्रिय हैल, गौरापद पाशरिल,
विमुख हइल हेन धन ।।२।।

हेन गौर दयामय, छाडि सब लाज-भय,
कायमने लह रे शरण।
परम दुर्मति छिल, तारे गोरा उद्धारिल,
तारा हैल पतितपावन ।।३।।

गोरा द्विज-नटराजे, बान्धह हृदय-माझे,
कि करिबे संसार-शमन।
नरोत्तमदासे कहे, गोरा-सम केह नहे,
ना भजिते देय प्रेमधन ।।४।।

* * * * * *

अवतार सार, गोरा अवतार

अवतार सार, गोरा अवतार,
केन ना भजिलि ताँरे ।
करि नीरे वास, गेल ना पियास,
आपन करम फेरे ।।१।।

कन्टकेर तरु, सदाइ सेविलि (मन),
अमृत पाइवार आशे।
प्रेम कल्पतरु, श्रीगौराङ्ग आमार,
ताहारे भाविलि विषे ।।२।।

सौरभेर आशे, पलाश शुँकिलि (मन),
नाशाते पशिल कीट।
इक्षुदण्ड भावि, काठ चुषिलि (मन),
केमने पाइबि मिठ ।।३।।

'हार' बलिया, गलाय परिलि (मन),
शमन किंकर साप।
'शीतल' बलिया, आगुन पोहालि (मन),
पाइलि वजर ताप ।।४ ।।

संसार भजिलि, श्रीगौराङ्ग भुलिल,
ना शुनिलि साधुर कथा।
इह परकाल, दुकाल खोयालि (मन),
खाइलि आपन माथा ।।५ ।।

* * * * * *

श्री गुरु-परंपरा

(श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद कृत)

कृष्ण होइते चतुर-मुख, होय-कृष्ण सेवोन्मुख,
ब्रह्मा होइते नारदेर मति।
नारद होइते व्यास, मध्व कोहे व्यास-दास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ गति ।।१ ।।

नरिहर-माधव बंशे, अक्षोभ्य परमहम्से,
शिष्य बोलि ऽ अंगिकार कोरे
अक्षोभ्येर शिष्य जय-तीर्थ नामे परिचय,
तार दास्ये ज्ञानसिंधु तोरे ।।२ ।।

ताहा होइते दयानिधि, तार दास विद्यानिधि
राजेंद्र होइला ताहा हऽते
ताहार किंकोर जय-धर्म नामे परिचय,
परंपरा जानो भालो मते ।।३ ।।

जयधर्म दास्ये ख्याति, श्री पुरुषोत्तम जति
ता हऽते ब्रह्मण्य-तीर्थ सूरी
व्यासतीर्थ तार दास, लक्ष्मीपति व्यास-दास
ताह हऽते माधवेंद्र पुरी ।।४ ।।

माधवेंद्र पुरी-बर, शिष्य-बर श्री-ईश्वर
नित्यानंद श्री अद्वैत विभु

ईश्वर पुरीके धन्य, कोरिलेन् श्री चैतन्य,
जगद्-गुरु गौर महाप्रभु ।।५।।

महाप्रभु श्री चैतन्य, राधा कृष्ण नहे अन्य
रूपानुग जनेर जीवन
विश्वंभर प्रियंकर, श्री स्वरूप-दामोदर
श्री गोस्वामी रूप-सनातन ।।६।।

रूप-प्रिय महाजन, जीव, रघुनाथ हन,
तारा प्रिय कवि कृष्णदास
कृष्णदास प्रिय बर, नरोत्तम सेवा पर,
जॉर पद विश्वनाथ-आशा ।।७।।

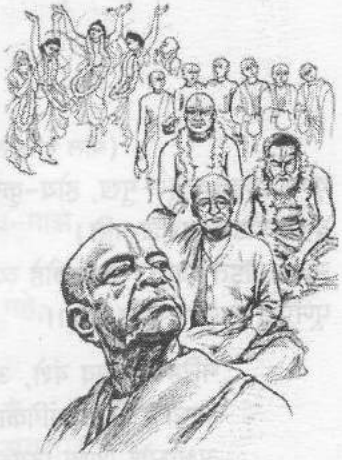

विश्वनाथ-भक्त साथ, बलदेव जगन्नाथ,
तॉर प्रिय श्री भक्तिविनोद
महा-भागवत-बर, श्री-गौरकिशोर बर
हरी-भजनेते जॉऽर मोद ।।८।।

ईहारा परमहंस, गौरांगेर निज-बंश
तॉदेर चरणे मम गति
आमि सेबा-उदासीन, नामेते त्रिदंडी दीन
श्री भक्ति सिद्धांत सरस्वती ।।९।।

* * * * * *

दुष्ट मन

(श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद कृत)

दुष्ट मन तुमि किसेर वैष्णव ?
प्रतिष्ठार तरे, निर्जनेर घरे,
तव 'हरि नाम' केवल 'कैतव' ।।१।।

जडेर प्रतिष्ठा, शुकरेर विष्ठा
जानो ना कि ताहा 'मायार वैभव'।
कनक कामिनी, दिवस-यामिनी,
भाविया कि काज, अनित्य से सब ।।२।।

तोमार कनक, भोगेर जनक,
कनकेर द्वारे सेवहो 'माधव' ।

कामिनीर काम, नहे तव धाम,
ताहार-मालिक केवल 'यादव' ।।३ ।।

प्रतिष्ठाशा-तरु, जड-माया-मरु
ना पेल 'रावण' युझिया 'राघव'
वैष्णवी प्रतिष्ठा, ताते कर निष्ठा
ताहा ना भजिले लभिबे रौरव ।।४ ।।

हरीजन-द्वेष, प्रतिष्ठाशा-क्लेष,
कर केन तबे ताहाँर गौरव ।
वैष्णवेर पाछे, प्रतिष्ठाशा आछे,
ता ते कभु नाहे 'अनित्य-वैभव'

से हरि-संबंध, शुन्य-माया-गंध,
ताहा कभु नय 'जडेर कैतव'।
प्रतिष्ठा-चंडाली, निर्जनता-जालि,
उभये जानिह मायिक रौरव ।।६ ।।

कीर्तन छाडिबो, प्रतिष्ठा माखिबो,
कि काज दुडिया तादृश गौरव।
माधवेन्द्र पुरी, भाव-घरे चुरि,
ता करिल कभु सदाइ जानबो ।।७ ।।

तोमार प्रतिष्ठा, 'शुकरेर विष्ठा',
तार-सह सम कभु ना मानव।
मत्सरता-वशे, तुमि जड-रसे,
मझेछो छाडिया कीर्तन-सौष्ठव ।।८ ।।

ताइ दुष्ट मन, 'निर्जन भजन',
प्रचारिछो छले 'कुयोगी-वैभव'।
प्रभु सनातने, परम जतने,
शिक्षा दिल याँहा, चिन्तो सेइ सब ।।९ ।।

सेइ दु'टि कथा', भुलो ना सर्वथा,
उच्चैः-स्वरे कर 'हरिनाम-र व'
'फल्गु' आर 'युक्त', 'बद्ध' आर 'मुक्त',
कभु ना भाविह, एकाकार सब ।।१० ।।

'कनक कामिनी', 'प्रतिष्ठा बघिम',
छडियाछे जरे, सेइ तो वैष्णव।
सेइ 'अनासक्त', सेइ 'शुद्ध भक्त'
संसार तथा पाय पराभव ।।११।।

यथा योग्य भोग, नहि तथा तग
'अनासक्त' सेइ, कि आर कहबो।
'आसक्ति रहित', 'संबंध सहित',
विषय-समुह सकलि 'माधव' ।।१२।।

सेइ 'युक्त-वैराग्य,' ताँहा तो' सौभाग्य,
ताँहा-ए जडेते हरिर वैभव।
कीर्तने जाँहार, 'प्रतिष्ठा संभार',
ताँहार सम्पत्ति केवल 'कैतव' ।।१३।।

'विषय-मुमुक्षु', 'भोगेर बुभुक्षु',
दु'ये त्यजो मन, दुइ 'अवैष्णव'।
'कृष्णेर संबंध', अप्राकृत स्कंध,
कभु नहे ताँहा जडेर संभव ।।१४।।

'मायावादी जन', कृष्णेतर मन,
मुक्त अभिमाने सेइ निन्दे वैष्णव।
वैष्णवेर दास, तव भक्ति आस,
केनो वा डाडिएहो निर्जन अहव ।।१५।।

जे 'फल्गु-वैराग्य', कहे निजे 'त्यागी',
से ना पारे कभु होइते 'वैष्णव'।
हरि-पद छाडि, 'निर्जनता बाडि',
लाभिया कि फल, 'फल्गु' सेइ वैभव ।।१६।।

राधा-दास्ये रहि, छाडि 'भोग-अहि',
'प्रतिष्ठाशा' नहे 'कीर्तन-गौरव'।
'राधा-नित्य-जन', ताँहा छाडि मन,
केन वा निर्जन-भजन-कैतव ।।१७।।

व्रजवासी-गण, प्रचारक-धन,
प्रतिष्ठा-भिक्षुक ता रा नहे 'शव'।

प्राण आछे ता र, से-हेतु प्रचार,
प्रतिष्ठाशा-हीन- 'कृष्ण-गाथा' सब ॥१८॥

श्री-दयित-दास, कीर्तनेते आश,
कर उच्चैः स्वरे 'हरि-नाम-र व'ग
कीर्तन-प्रभावे, स्मरण स्वभावे,
से काले भजन-निर्जन संभव ॥१९॥

* * * * *

श्री दामोदराष्टक

(श्री सत्यव्रत मुनि कृत)

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं
परामृष्टमत्यंतो द्रुत्य गोप्या ॥१॥

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं - मृजन्तं
करांभोजयुग्मेन सातङ्क नेत्रम् ।
मुहुःश्वास कंप त्रिरेखाङ्ककण्ठ
स्थित ग्रैव दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥२॥

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्द कुण्डे
स्वघोषं निमज्जन्तमारव्यापयन्तम् ।
तदीयेषितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥३॥

वरं देव ! मोक्षं न मोक्षावधिं वा
न चान्यं वृणेऽहं वरेशाद-पीह ।
इदं ते वपुर्नाथ ! गोपालबालं
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ? ॥४॥

इदं ते मुखांभोजमत्यन्तनिलै
र्वृत्तं कुन्तलैः स्निग्धरक्तैश्च गोप्या ।
मुहुश्चुम्बित्तं बिम्बरक्ताधरं मे
मनस्याविरास्तामलं लक्षलाभैः ॥५॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो !
प्रसीद प्रभो ! दुःखजालाब्धि मग्नम्।
कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीन बतानु
गृहाणेश ! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ।।६ ।।

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ।।७ ।।

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यं ।।८ ।।

* * * * * *

भजहू रे मन श्री नंदनंदन

(गोविंद दास कविराज विरचित)

भजहू रे मन श्री नंद नंदन अभय चरणारविंद रे
दुर्लभ मानव जनम सत्-संगेतरोहो ए भव सिंधु रे ।।१ ।।

शित आतप बात बरिषण ए दिन जामिनी जागिरे
बिफले सेविनु कृपण दुर्जन चपल सुख लब लागिऽरे ।।२ ।।

ए धन, यौबन, पुत्र, परिजन इथे कि आछे परतीति रे
कमल-दल-जल, जीवन-तलमल भजहू हरि पद नीति रे ।।३ ।।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वंदन पाद-सेवन, दास्य रे
पूजन, सखी जन, आत्म निवेदन गोविंद दास अभिलाष रे ।।४ ।।

* * * * * *

श्री दशावतार स्तोत्र

(श्रील जयदेव गोस्वामी लिखित 'गीत गोविंद' से साभार)

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहितवहित्र चरित्रमखेदम्
केशव ! धृतमीनशरीर ! जय जगदीश ! हरे ! ।।१।।

क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे
धरणीधरणकिण - चक्रगरिष्ठे
केशव ! धृतकूर्मशरीर ! जय जगदीश ! हरे ! ।।२।।

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलङ्क कलेव निमग्ना।
केशव ! धृतशूकररूप ! जय जगदीश ! हरे ! ।।३।।

तव करकमलवरे नखमद्भुत-श्रृङ्गं
दलितहिरण्यकशिपुतनु-भृङ्गम्।
केशव ! धृतनहरिरूप ! जय जगदीश ! हरे ! ।।४।।

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन
पदनखनीरजनितजनपावन।
केशव ! धृतवामनरूप ! जय जगदीश ! हरे ! ।।५।।

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्।
केशव ! धृतभृगुपतिरूप ! जय जगदीश ! हरे ! ।।६

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्।
केशव ! धृतरामशरीर ! जय जगदीश ! हरे ! ।।७।।

वहसि वपुषी विशदे वसनं जलदाभं
हलहतिभितिमिलित यमुनाभम् ।
केशव ! धृतहलधररूप ! जय जगदीश ! हरे ! ॥८॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं
सदयहृदय ! दर्शित-पशुघातम् ।
केशव ! धृतबुद्धशरीर ! जय जगदीश ! हरे ! ॥९॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव ! धृतकल्किशरीर ! जय जगदीश ! हरे ! ॥१०॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं
श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव ! धृतदशविधरूप ! जय जगदीश ! हरे ! ॥११॥

श्री दशावतार प्रणाम

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्विभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलत्स्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥१२॥

* * * * * *

श्रीत-कमल

(श्रील जयदेव गोस्वामी विरचित)

श्रीत कमलाकुच मंडल (हे) ! धृत कुंडल (ए) !
कलित ललित वनमाला जय जय देव हरे ॥१॥

दिनमणि मंडल मंडन (हे) ! भव खंडन (ए) !
मुनिजन मानस हंस जय जय देव हरे ॥२॥

कालिया-विषधर गंजन (हे) ! जन रंजन (ए) !
यदु कुल नलिन-दिनेश जय जय देव हरे ॥३॥

मधु-मुर-नरक-विनाशक (हे) ! गरुडासन (ए) !
सुर-कुल-केलि निदान जय जय देव हरे ॥४॥

अमल कमल दल लोचन (हे) ! भव मोचन (ए) !
त्रिभुवन-भुवन-निधान जय जय देव हरे ।।५।।

जनक-सुता कृत-भूषण (हे) ! जित दूषण (ए) !
समर-शमित दशकंठ जय जय देव हरे ।।६।।

अभिनव-जलधर-सुंदर (हे) ! धृत मंदर (ए) !
श्री मुखचंद्रचकोर जय जय देव हरे ।।७।।

तव चरणम् प्रणत्ता वयम् (हे) ! इति भावय (ए)
कुरु कुशलम् प्रणतेषु जय जय देव हरे ।।८।।

श्री जयदेव कवेर इदम (हे) ! कुरूत मुदम् (ए) !
मंगलम्-उज्वल गीतम् जय जय देव हरे ।।९।।

* * * * * *

हे गोविंद हे गोपाल

(श्रीजयदेव गोस्वामीकृत)

हे गोविन्द हे गोपाल
केशव माधव दीन-दयाल ।।१।।

तुमि परम दयाल प्रभु, परम दयाल
केशव माधव दीन-दयाल ।।२।।

पीत-बसन परि मयुरेर शिख धरी
मुरलीर वाणी-तुले बोले राधा-नाम ।।३।।

तुमि मदेर गोपाल प्रभु, मदेर गोपाल
केशव माधव दीन-दयाल ।।४।।

भव-भय-भञ्जन श्री मधु-सुदन
विपद-भञ्जन तुमि नारायण ।।५।।

* * * * * *

श्री श्री गौर नित्यानंदेर दया

(लोचन दास ठाकुर विरचित)

परम कोरूणा, पहू दुइ जन, निताइ गौरचंद्र
सब अवतार-सार शिरोमणि केवल आनंद कंद ।।१।।

भजो भजो भाइ, चैतन्य निताइ, सृद्दढ बिश्वास कोरि
विषय छाडिया, से रसे मजिया, मुखे बोलो हरि हरि ।।२।।

देखो ओरे भाइ, त्रि-भुवने नाइ एमोन दोयाल दाता
पशु पक्षी झुरे, पाषाण विदरे शुनिऽजॉर गुण-गाथा ।।३।।

सम्सारे मजिया, रोहिलि पोडिया, से पदे नहिलो आश
आपन करम, भुंजाये शमन, कहोये लोचन-दास ।।४।।

निताई गुणमणि

(श्रील लोचनदास ठाकूर रचित ; 'श्रीचैतन्यमङ्गल' से साभार)

निताई गुणमणि आमार निताई गुणमणि।
आनिया प्रेमेर वन्या भासाइलो अवनी।।१।।

प्रेमेर वन्या लोइया निताई आइला गौडदेशे।
डुपिलो भकत-गण दीन हीन भासे।।२।।

दीन हीन पतित पामर नाहि बाछे ।
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम सबाकारे जाचे।।३।।

आबद्ध करुणा-सिन्धु निताई काटिया मुहान् ।
घरे घरे बुले प्रेम-अमियार बान ।।४।।

लोचन बोले मोर निताई जेबा ना भजिलो।
जानिया शुनिया सेइ आत्म-घाती होइलो।।५।।

* * * * * *

श्रीनित्यानंद-निष्ठा

अक्रोध परमानंद नित्यानंद-राय।
अभिमान-शून्य निताइ नगरे बेडाय ।।१।।

अधमपतित जीवेर द्वारे द्वारे गिया।
हरिनाम महामंत्र दिच्छेन बिलाइया ।।२।।

जारे देखे ता'रे कहे दन्ते तृण धरि।
आमारे किनिया लह, बोलो गौरहरि ।।३ ।।

एत बलि, नित्यानंद भूमे गडि, जाय।
सोनार पर्वत जेन धूलाते लोटाय ।।४ ।।

हेत अवतारे जार रति ना जन्मिल।
लोचन बले सेइ पापी एलो आर गेलो ।।५ ।।

* * * * * *

भज रे भज रे आमार मन अति मन्द

भज रे भज रे आमार मन अति मन्द।
(भजन बिना गति नाइ रे)
(भज) व्रजवने राधा-कृष्ण चरणारविन्द।।१ ।।
(ज्ञान कर्म परिहरि रे)

(भज) गौर गदाधराद्वैत गुरु-नित्यानन्द
(गौर कृष्णे अभेद जेने रे)
(गुरु कृष्ण प्रिय जेने रे)
(स्मर) श्रीनिवास, हरिदास, मुरारि, मुकुन्द ।।२ ।।
(गौर प्रेमे स्मर, स्मर रे)

(स्मर) रूप सनातन जीव रघुनाथ द्वन्द्व।
(यदि भजन करबे रे)
(स्मर) राघव गोपाल भट्ट स्वरूप रामानन्द।।३ ।।
(कृष्ण प्रेम यदि चाओ रे)

(स्मर) गोष्ठिसह कर्णपूर, सेन शिवानन्द ।
(अजस्र स्मर-स्मर रे)
(स्मर) रूपानुग साधुजन भजन-आनन्द ।।४ ।।
(व्रजे वास यदि चाओ रे)

* * * * * *

गौराङ्ग तुमि मोरे दया ना छाडिहो

गौराङ्ग तुमि मोरे दया ना छाडिहो
आपन करिया रांगा चरणे राखिहो ।।१ ।।

तोमार चरण लागि सब तेयागिलु
शीतल चरण पाया शरण लोइलु ।।२।।

एइ कुले ओ कुले मुनी दिलु तिलाञ्जलि
राखिहो चरणे मोरे आपनार बोली ।।३।।

वासुदेव घोष बोले चरणे धरिया
कृपा करी राखो मोरे पद-छाया दिया ।।४।।

* * * * * *

श्री व्रज-धाम-महिमामृत

(श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी विरचित)

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृंदावन
श्री-गोविंद, गोपीनाथ, मदन मोहन ।।१।।

श्यामकुंड, राधाकुंड, गिरि-गोवर्धन
कालिंदी-जमुना जय, जय महावन ।।२।।

केशी-घाट, बंशि-बट, द्वादश-कानन
जॉहा सब लीला कोइलो श्री-नंद-नंदन ।।३।।

श्री-नंद-जशोदा जय, जय गोप-गण
श्रीदामादि जय, जय धेनु वत्स-गण ।।४।।

जय बृषभानु, जय कीर्तिदा सुंदरी
जय पूर्णमासी, जय आभीर-नागरी ।।५।।

जय जय गोपीश्वर वृंदावन माझ
जय जय कृष्ण-सखा बटु द्विज-राज ।।६।।

जय राम घाट, जय रोहिणी-नंदन
जय जय वृंदावन-बासी जत जन ।।७।।

जय द्विज-पत्नी, जय नाग कन्या-गण
भक्तिते जॉहारा पाइलो गोविंद-चरण ।।८।।

श्री रास-मण्डल जय, जर राधा-श्याम
जय जय रास-लीला सर्व-मनोरम ।।९।।

जय जयोज्वल-रस सर्व-रस-सार
परकीया-भावे जाहा ब्रजेते प्रचार ।।१०।।

श्री जाह्नवी-पाद-पद्म कोरिया स्मरण
दीन कृष्ण-दास कोहे नाम-संकीर्तन ।।११।।

* * * * *

श्री राधिका-स्तव

(श्रील रूप गोस्वामी विरचित 'स्तव माला' से साभार)

राधे जय जय माधव-दयिते
गोकुल-तरुणी मण्डल महिते ।।१।।

दामोदर-रति-वर्धन-वेशे
हरि निष्कुट-वृंदा विपिनेशे ।।२।।

वृषभानूदधि नव-शशि-लेखे
ललिता सखी गुण-रमित विशाखे ।।३।।

करुणाम् करु मयि करुणा भरिते
सनक-सनातन-वर्णित-चरिते ।।४।।

* * * * * *

कृष्ण देव भवन्तम् वन्दे

(श्रील रूप गोस्वामी कृत)

कृष्ण देव भवन्तम् वन्दे ।।ध्रु.।।

मन-मानस-मधुकरम् अर्पया निज-पद-पङ्कज-मकरन्दे
यति अपि समाधिषु विधिरपि पश्यति
न तव नखाग्रमरीचिम्।
इदं इच्छामि निशम्य तवाच्युत
तदपि कृपाद्भुतवीचिम् ।।१।।

भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव
न त्वयि मम तिलमात्री।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक
दुर्घट-घटन-विधात्री ।।२।।

अयं अविलोलतयाद्य सनातन
कलिताद्भुत-रस-भारम्।
निवसतु नित्यमिहामृत निन्दति
विन्दं मधुरिमा-सारम् ॥३॥

* * * * * *

श्रीगौर-गीति

मधुकर-रञ्जित-मालति-मण्डित-जितथन कुञ्चित केशम्।
तिलक-विनिन्दित-शशधर-रूपक-भुवन-मनोहर-वेशम् ॥१॥

सखे कलय गौरमुदारम्।
निन्दित-हाटक-कान्ति-कलेवर गर्वितमारकमारम् ॥२॥

मधु-मधुरस्मित-लोभित तनुभृतमनुपम्-भाव-विलासम्।
निधुवन नागरी मोहित-मानस-विकथित-गदगद भाषम् ॥३॥

परमाकिञ्चन-किञ्चन-नरगण-करुणा-वितरणशीलम् ।
क्षोभित-दुर्मति-राधामोहन-नामक-निरूपम्-लीलम् ॥४॥

* * * * * *

जय राधा कृष्ण गीति

जय राधा माधव, राधा माधव राधे
(जयदेवेर प्राण धन हे) ॥१॥

जय राधा मदनगोपाल, राधा मदनगोपाल, राधे
(सीता नाथेर प्राण धन हे) ॥२॥

जय राधा गोविंद, राधा गोविंद, राधे
(रूप गोस्वामीर प्राण धन हे) ॥३॥

जय राधा मदनमोहन, राधा मदनमोहन, राधे
(सनातनेर प्राण धन हे) ॥४॥

जय राधा गोपीनाथ, राधा गोपीनाथ, राधे
(मधू पंडितेर प्राण धन हे) ॥५॥

जय राधा दामोदर, राधा दामोदर, राधे
(जीव गोस्वामीर प्राणधन हे) ॥६॥

जय राधा रमण, राधा रमण, राधे
(गोपाल भट्टेर प्राणधन हे) ।।७।।

जय राधा विनोद, राधा विनोद, राधे
(लोकनाथेर प्राणधन हे) ।।८।।

जय राधा गोकुलानंद, राधा गोकुलानंद, राधे
(विश्वनाथेर प्राणधन हे) ।।९।।

जय राधा गिरिधारी, राधा गिरिधारी, राधे
(दास गोस्वमीर प्राणधन हे) ।।१०।।

जय राधा श्यामसुंदर, राधा श्यामसुंदर, राधे
(श्यामानंदेर प्राणधन हे) ।।११।।

जय राधा बंकबिहारी, राधा बंकबिहारी, राधे
(हरिदासेर प्राणधन हे) ।।१२।।

जय राधा राधाकांत, राधा राधाकांत, राधे
(वक्रेश्वरेर प्राणधन हे) ।।१३।।

जय गांधर्विका गिरिधारी, गांधर्विका गिरीधारी, राधे
(सरस्वतीर प्राणधन हे) ।।१४।।

जय राधा रासबिहारी, राधा रासबिहारी, राधे
(श्रील प्रभुपाद प्राणधन हे) ।।१५।।

* * * * * *

कृष्ण–जिनका नाम है

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है ।
ऐसे श्री भगवान को बारम्बार प्रणाम है।।१।।

यशोदा जिनकी मैया है, नन्दाजी बापैया है।
ऐसे श्री गोपाल को बारम्बार प्रणाम है।।२।।

राधा जिनकी छाया है, अद्‌भुत जिनकी माया है।
ऐसे श्री घनःश्याम को बारम्बार प्रणाम है।।३।।

लूटलूट दधिमाखन खायो, ग्वाल बाल संग धेनु चरायो।
ऐसे लीलाधाम को बारम्बार प्रणाम है।।४।।

द्रुपद-सुता की लाज बचायो, ग्रहसे गजको फंद छुडाओ।
ऐसे कृपाधाम को बारम्बार प्रणाम है ।।५ ।।

* * * * * *

श्री हरेर नामाष्टक

मधुरम् मधुरेभ्यो ऽ पि मंगलेभ्यो ऽ पि मंगलम्
पावनम् पावनेभ्यो ऽ पि हरेरे नामैव केवलम् ।।१ ।।

आब्रह्म-स्तंब पर्यंतम् सर्व माया-मयम् जगत्
सत्यम् सत्यम् पुनःसत्यम् हरेर नामैव केवलम ।।२ ।।

स गुरुः स पिता चापि सा माता बांधवोऽपि सः
शिक्षयेत् सदा स्मार्तुम हरेर नामैव केवलम् ।।३ ।।

निःश्वासे नहि विश्वासः कदा रूद्धो भविष्यति
कीर्तनीय मतो बाल्याद् हरेर नामैव केवलम् ।।४।।

हरिः सदा वसत् तत्र यत्र भागवता जनाः
गायन्ति भक्ति भावेन हरेर नामैव केवलम् ।।५ ।।

अहो दुःखम् महादुःखम् दुःखाद् दुःखतरम् यतः
काचायम् विस्मृतम् रत्न हरेर नामैव केवलम् ।।६ ।।

दीयताम् दीयताम् कर्णो नीयताम् नीयताम् वचः
गीयताम् गीयताम् नित्यम् हरेर नामैव केवलम् ।।७ ।।

तृण कृत्य जगत् सर्वम् राजते सकल - परम्
चिदानन्द मयम् शुद्धम् हरेर नामैव केवलम् ।।८ ।।

* * * * * *

श्याम श्याम श्याम

(श्रील वासुदेव घोष विरचित)

सुंदर कुंडल मधुर विशाल
गले सुहयवैजयन्ति माला
य छवि कि बलिहारि राधे श्याम श्याम श्याम ।।१ ।।
जय माधव मदन मुरारि राधे श्याम श्याम श्याम

जय केशव कालिमल हरि राधे श्याम श्याम श्याम

ग्वाल बाल संग धेनु चराइ
वन वन भ्रमत फिरे जादुराइ
कांदे कन्मर करि राधे श्याम श्याम श्याम ।।२।।

कबहुँ लूट लूट दधि खाइयो
कबहुँ मधुवन रास रचायो
नृत्यति विपिन विहारि राधे श्याम श्याम श्याम ।।३।।

एक दिन मान इंद्रको मारो
नक उपर गोवर्धन धारो
नाम परो गिरिधारी राधे श्याम श्याम श्याम ।।४।।

चुरा चुरा नवनीत जो खायो
व्रज वनितन पई नाम चरायो
माखन चोर मुरारी राधे श्याम श्याम श्याम ।।५।।

दुर्योधन का भोग न खायो
रुख शाक विदुर घर खायो
ऐछे प्रेम पुजारी राधे श्याम श्याम श्याम ।।६।।

करुणा कर द्रौपदि पूकारी
पट्मे लिपटगोये वनमाली
निरख राधे नर नारि राधे श्याम श्याम श्याम ।।७।।

* * * * * *

यदि गौर ना होइतो

(श्रील वासुदेव घोष रचित)
यदि गौर ना होइतो, तबे कि होइतो,
केमोने धरितां दे।
राधार् महिमा, प्रेमरस-सीमा
जगते जानात के ।।१।।

मधुर वृन्दा, विपिन-माधुरी,
प्रवेश चातुरी सार।
बरज-युवति, भावेर भकति,

सकति होइत कार ।।२।।

गाओ गाओ पुनः गौराङ्गेर गुण,
सरल करिया मन।
ए भव-सागरे, एमोन दयाल,
ना देखिये एक-जन ।।३।।

(आमि) गोराङ्ग बोलिया, ना गेनु गलिया,
केमोने धरिनु दे।
वासुर हिया, पाषाण दिया,
केमोने गडियाछे ।।४।।

* * * * * *

जय जय जगन्नाथ शचीर नन्दन

(श्रील वासुदेव घोष रचित)

जय जय जगन्नाथ शचीर नन्दन
त्रिभुवने करे जार चरण वन्दन ।।१।।

नीलाचले शंख-चक्र-गदा-पद्म-धर
नदीया नगरे दण्ड-कमण्डलु-कर ।।२।।

केह बोले पूरबे रावण बधिला
गोलोकेर वैभव लीला प्रकाश करिला ।।३।।

श्री-राधार भावे एबे गोरा अवतार
हरे कृष्ण नाम गौर करिला प्रचार।।४।।

वासुदेव घोष बोले करि जड हाट
जेइ गौर सेइ कृष्ण सेइ जगन्नाथ ।।५।।

* * * * * *

श्री श्री वैष्णव शरण

वृंदावनवासी यत वैष्णवेर गण।
प्रथमे वंदना करि सबार चरण ।।१।।

नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण।
भूमिते पडिया वन्दो सभार चरण ।।२।।

नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त।
सभार चरण वन्दों हञा अनुरक्त ।।३।।

महाप्रभुर भक्त यत गौड देशे स्थिति।
सभार चरण वन्दों करिया प्रणति।।४।।

ये-देशे, ये देशे वैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्वबाहु करि वन्दों सबार चरण ।।५।।

हञाछेन हइबन प्रभुर यत दास।
सभार चरण वन्दों दन्ते करि घास।।६।।

ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने-जने ।
ए वेद-पुराणे गुण गाय येबा शुने ।।७।।

महाप्रभुर गण सब पतितपावन।
ताइ लोभे मुञि पापी लइनु शरण ।।८।।

वन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि।
तमो-बुद्धिदोषे मुञि दम्भ मात्र करि ।।९।।

तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास।
दोष क्षमि मो-अधमे कर निज दास ।।१०।।

सर्ववांच्छासिद्धि हय, यमबंध छूटे।
जगते दुर्लभ हञा प्रेमधन लूटे ।।११।।

मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय ।।१२।।

* * * * * *

दैन्य ओ प्रपत्ती

(एक अज्ञात वैष्णव कवी)

हरि हे दयाल मोर जय राधा-नाथ।
बारो बारो एइ-बारो लह निज-साथ ।।१।।

बहु योनी भ्रमि नाथ ! लोइनु शरण।
निज-गुणे कृपा कर अधम-तारण ।।२।।

जगत-कारण तुमि जगत-जीवन।

तोम छाडा कार नाहि हे राधा-रमण ।।३।।

भुवन-मङ्गल तुमि भुवनेर पति।
तुमि उपेक्षिले नाथ, कि होइबे गति ।।४।।

भाविया देखिनु एइ जगत-माझारे।
तोमा बिना केह नाहि ए दासे उद्धारे ।।५।।

* * * * * *

श्रीगोवर्धनवासप्रार्थनादशकम्

(श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी रचित)

निजपतिभुजदण्डच्छत्रभावं प्रपद्य
प्रतिहतमदधृष्टोद्दण्डदेवेन्द्रगर्व।
अतुलपृथुलशैलश्रेणिभूप ! प्रियं मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ।।१।।

प्रमदमदनलीलाः कन्दरे कन्दरे ते
रचयति नवयूनोर्द्वन्द्वमस्मिन्नमन्दम्।
इति किल कलनार्थं लग्नकस्तद्द्वयोर्मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ।।२।।

अनुपम-मणिवेदी-रत्नसिंहासनोर्वी
रुहझर-दरसानुद्रोणि-संघेषु रंगैः।
सह बल-सखिभिः संखेलयन् स्वप्रियं मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ।।३।।

रसनिधि-नवयूनोः साक्षिणीं दानकेले
र्द्युतिपरिमलविद्धां श्यामवेदीं प्रकाश्य।
रसिकवरकुलानां मोदमास्फालयन्मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ।।४।।

हरिदायितमपूर्वं राधिका-कुण्डमात्म-
प्रियसखमिह कण्ठे नर्मणाऽऽलिंग्य गुप्तः ।
नवयुवयुग-खेलास्तत्र पश्यन् रहो मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ।।५।।

स्थल-जल-तल-शष्पैर्भूरुहच्छायया च
प्रतिपदमनुकालं हन्त संवर्धयन् गाः।
त्रिजगति निजगोत्रं सार्थकं रव्यापयन्मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ॥६॥

सुरपतिकृत-दीर्घद्रोहतो गोष्ठरक्षां
तव नव-गृहरूपस्यान्तरे कुर्वतैव।
अघ-बक-रिपुणोच्चैर्दत्तमान ! द्रुतं मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ॥७॥

गिरिनृप ! हरिदासश्रेणीवर्येति-नामा
मृतमिदमुदितं श्रीराधिकावक्त्रचन्द्रात् ।
व्रजजन-तिलकत्वे क्लृप्त ! वेदैः स्फुट मे
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ॥८॥

निज-जनयुत-राधाकृष्णमैत्रीरसाक्त-
व्रजनर-पशु पक्षि ब्रात-सौख्यैकदातः।
अगणित-करुणत्वान्मामुरीकृत्य तान्तं
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ॥९॥

निरूपधि-करुणेन श्रीशचीनन्दनेने
त्वयि कपटि-शठोऽपि त्वत्प्रियेणार्पितोऽस्मि।
इति खलु मम योग्यायोग्यतां तामगृह्णन
निज-निकट-निवास देहि गोवर्धन ! त्वम् ॥१०॥

रसद-दशकमस्य श्रील-गोवर्धनस्य
क्षितिधर-कुलभर्तुर्यः प्रयत्नादधीते।
स सपदि सुखदेऽस्मिन् वासमासाद्य साक्षा-
च्छुभद-युगलसेवारत्नमाप्नोति तूर्णम् ॥११॥

* * * * * *

श्रीशचीसुताष्टकम्

(श्रील सार्वभौम भट्टाचार्य द्वारा रचित)

नव गौरवरं नवपुष्प-शरम्
नवभाव-धरमं नवलास्य-परम।
नवहास्य-करं नवहेम-वरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम् ॥१॥

नवप्रेम-युतं नवनीत-शुचम्
नववेश-कृतं नवप्रेम-रसम्।
नवधा विलासत शुभप्रेम-मयम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम् ॥२॥

हरिभक्ति-परं हरिनाम-धरम्
कर-जाप्य-करं हरिनाम-परम्।
नयने सततं प्रणयाश्रु-धरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्॥३॥

सततं जनता-भव-ताप-हरम्
परमार्थ-परायण-लोक-गतिम्।
नव-लेह-करं जगत्-ताप-हरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम् ॥४॥

निज-भक्ति-करं प्रिय-चारुतरम्
नट-नर्तन-नागर-राज-कुलम्।
कुल-कामिनी-मानस-लास्य-करम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्॥५॥

करताल-वलं कल-कण्ठ-रवम्
मृदु-वाद्य-सुवीणिकया मधुरम्।
निज-भक्ति-गुणावृत-नाट्य-करम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्॥६॥

युगधर्म-युतं पुनर्नन्द-सुतम्
धरणी-सुचित्रं भव-भावोचितम्।
तनु-ध्यान-चितं निज-वास-युतम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम् ॥७॥

अरुणं नयनं चरणं वसनम्
वदने स्कलितं स्वक्-नाम-धरम्।
कुरुते सु-रसां जगतः जीवनम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्॥८॥

* * * * * *

श्रीशचीतनयाष्टकम्

(श्रील सार्वभौम भट्टाचार्य कृत)

उज्ज्वल-वरण-गौरवर-देहं
विलसित-निरवधि-भावविदेहम्।
त्रिभुवन-पावन-कृपायाः लेशं
तं प्रणमामि च श्रीशचीनयम् ।।१ ।।

गद्गद-अन्तर-भावविकारं
दुर्जन-तर्जन-नाद-विशालम्।
भवभयभञ्जन-कारण-करुणं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।२ ।।

अरुणाम्बरधर-चारुकपोलं
इन्दु-विनिन्दित-नखचय-रुचिरम्।
जल्पित-निजगुणनाम-विनोदं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।३ ।।

विगलित-नयन-कमल-जलधारं
भूषण-नवरस-भावविकारम्।
गति-अतिमन्थर-नृत्यविलासं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।४ ।।

चञ्चल-चारु-चरण-गति-रुचिरं
मञ्जीर-रञ्जित-पदयुग-मधुरम्।
चन्द्र-विनिन्दित-शीतलवदनं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।५ ।।

घृत-कटि-डोर-कमण्डलु-दण्डं
दिव्य कलेवर-मुण्डित-मुण्डम्।
दुर्जन-कल्मष-खण्डन-दण्डं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।६ ।।

भूषण-भूरज-अलका-वलितं
कम्पित-बिम्बाधरवर-रुचिरम्।
मलयज-विरचित-उज्जवल-तिलकं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।।७ ।।

निन्दित-अरुण-कमल-दलनयनं
आजानुलम्बित श्रीभुज युगलम्।
कलेवर-कैशोर-नर्तक-वेशं
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥८॥

* * * * * *

श्रीराधिकाष्टकम्

कुंकुमाक्त-काञ्चनाब्ज-गर्वहारि-गौरभा
पीतनाञ्चिताब्ज-गन्धकीर्ति निन्दि-सौरभा।
बल्लवेश-सूनु-सर्व-वाञ्छितार्थ-साधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥१॥

कौरुविन्द-कान्ति-निन्दि-चित्र-पट्ट-शाटिका
कृष्ण-मत्तभृङ्ग-केलि-फुल्ल-पुष्प-वाटिका।
कृष्ण-नित्य सङ्गमार्थपद्मबन्धु-राधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥२॥

सौकुमार्य-सृष्ट-पल्लवालि-कीर्ति-निग्रहा
चन्द्र-चन्दनोत्पलेन्दु-सेव्य-शीत-विग्रहा।
स्वाभिमर्श-बल्लवीश-काम-ताप-बाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥३॥

विश्ववन्द्य-यौवताभिवन्दितापि या रमा
रूप-नव्य-यौवनादि-सम्पदा न यत्समा।
शील-हार्द-लीलया च सा यतोऽस्ति नाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥४॥

रास-लास्य गीत-नर्म-सत्कलालि-पण्डिता
प्रेम-रम्य-रूप-वेश-सद्गुणालि-मण्डिता।
विश्व-नव्य-गोप-योषिदालितोऽपि याधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥५॥

नित्य-नव्य-रूप केलि-कृष्णभाव-सम्पदा
कृष्णराग-बन्ध-गोप-यौवतेषु-कम्पदा।
कृष्ण-रूप-वेश-केलि-लग्न-सत्समाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥६॥

स्वेद-कम्प-कण्टकाश्रु-गद्गदादि-सञ्चिता-
मर्ष-हर्ष-वामतादि-भाव-भूषणाञ्चिता।
कृष्ण-नेत्र-तोषि-रत्न-मण्डनालि-दाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥७॥

या क्षणार्थ-कृष्ण-विप्रयोग-सन्ततोदिता-
नेक-दैन्य-चापलादि-भाववृन्द-तोदिता।
यत्नलब्ध-कृष्णसङ्ग-निर्गताखिलाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका ॥८॥

अष्टकेन यस्त्वनेन नौति कृष्णवल्लभां
दर्शनेऽपि शैलजादि-योषिदालि-दुर्लभाम्।
कृष्णसङ्ग-नन्दितात्म-दास्य-सीधु-भाजनं
तं करोति नन्दितालि-सञ्चयाशु सा जनम् ॥९॥

* * * * *

श्रीचौराग्रगण्यपुरुषाष्टकम्

व्रजे प्रसिद्धं नवनीतचौरं, गोपांगनानां च दुकुलचौरम् ।
अनेक-जन्मार्जित-पापचौरं, चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि ॥१॥

श्रीराधिकाया हृदयस्य चौरं, नवांबुदश्यामलकान्तिचौरम्।
पदाश्रितानां च समस्तचौरं, चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि ॥२॥

अकिंचतीकृत्य पदाश्रितं यः, करोति भिक्षुं पथि गेहहीनम्।
केनाप्यहो भीषणचौर ईदृग्, दृष्टः श्रुतो वा न जगत्त्रयेऽपि ॥३॥

यदीय नामापि हरत्यशेषं, गिरि प्रसारानपि पापराशीन् ।
आश्चर्यरूपो ननु चौर ईदृग्, दृष्टः श्रुतो वा न मया कदापि ॥४॥

धनं च मानं च तथेन्द्रियाणि, प्राणांश्च हत्वा मम सर्वमेव ।
पलायसे कुत्र धृतोऽद्य चौरं, त्वं भक्तिदाम्नासि मया निरुद्धः ॥५॥

छिनत्सि घोरं यमपाशबन्धं, भिनत्सि भीमं भवपाशबन्धम् ।
छिनत्सि सर्वस्य समस्तबन्धं, नैवात्मनो भक्तकृतं तु बन्धम् ॥६॥

मन्मानसे तामसराशिघोरे, कारागृहे दुःखमये निबद्धः ।
लभस्व हे चौर ! हरे ! चिराय, स्वचौर्यदोषोचितमेव दण्डम् ॥७॥

कारागृहे वस सदा हृदये मदीये
मद्भक्तिपाशदृढबन्धननिश्चलः सन्।
त्वां कृष्ण हे ! प्रलयकोटिशतान्तरेऽपि
सर्वस्वचौर ! हृदयान्नहि मोचयामि ॥८॥

* * * * * *

श्रीव्रजराजसुताष्टकम्

नव-नीरद-निन्दित-कान्ति-धरम्
रससागर-नागर-भूप-वरम्।
शुभ-वंकिम-चारु-शिखंड शिखम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥१॥

भ्रु-विशन्कित-वन्किम-शक्रु-धनुम्
मुखचन्द्र-विनिन्दित-कोटि-विधुम् ।
मृदु-मन्द-सुहास्य-सुभाष्य-युतम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥२॥

सुविकम्पद-अनङ्ग-सदङ्ग-धरम्
व्रजवासी-मनोहर-वेश-करम्।
भृश-लांच्छित-नील-सरोज-दृशम्
भज कृष्णानिधिं व्रजराज-सुतम् ॥३॥

अलकावलि-मण्डित-भाल-तटम्
श्रुति-दोलित-माकर-कुण्डलकम्।
कोटि-वेष्ठित-पीत-पटं सुधटम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥४॥

कल-नूपुर-राजित-चारु-पदम्
मरि-रञ्जित-गञ्जित-भृङ्ग-मदम्।
ध्वज-वज्र-झाषान्कित-पाद-युगम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥५॥

भृश-चन्दन-चर्चित-चारु-तनुम्
मणि-कौस्तुभ-गर्हित-भानु-तनुम्।
व्रजबाला-शिरोमणि-रूप-धृतम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥६॥

सुर-वृन्द-सुवन्द्य-मुकुन्द-हरिम्
सुर-नाथ-शिरोमणि-सर्व-गुरुम्।
गिरिधारि-मुरारि-पुरारि-परम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥७॥

वृषभानु-सुत-वर-केलि परम्
रसराज-शिरोमणी-वेश-धरम्।
जगदीश्वरं-ईश्वरमीड्य-वरम्
भज कृष्णनिधिं व्रजराज-सुतम् ॥८॥

* * * * * *

श्रीवृंदावनाष्टकम्

(श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकूर रचित)

न योगिसद्धर्न ममास्तु मोक्षो,
वैकुण्ठलोकेऽपि न पार्षदत्वम्।
प्रेमापि न स्यादिति चेत्तरां तु,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥१॥

तार्णं जनुर्यत्र विधिर्ययाचे,
सद्भक्तचूडामणिरुद्धवोऽपि
वीक्ष्यैव माधुर्यधूरां तदस्मिन्
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥२॥

किं ते कृतं हन्ततपः क्षितीति,
गोप्योऽपि भूमे स्तुवते रस कीर्तिम्।
येनैव कृष्णांघ्रिपदांकितेऽस्मिन्,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥३॥

गोपांगनालंपटतैव यत्र,
यस्यां रसः पूर्णतमत्वमाप।
यतो रसो वै स इति श्रुतिस्त-न्
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥४॥

भाण्डीर-गोवर्धन-रासपीठै
स्त्रीसीमके योजन-पंचकेन।
मिते विभुत्वादमितेऽपि चास्मिन्,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥५॥

यत्राधिपत्यं वृषभानुपुत्र्या,
येनोदयेत् प्रेमसुखं जनानाम्।
यस्मिन्माशा बलवत्यतोऽस्मिन्,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥६॥

यस्मिन् महारासविलासलीला,
न प्राप यां श्रीरपि सा तपोभिः
तत्रोल्लसन्मंजु-निकुंजपुंजे,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥७॥

सदा रुरु-न्यंकुमुखा विशंकं,
खेलन्ति पिकालिकीराः ।
शिखण्डिनो यत्र नटन्ति तस्मिन्,
ममास्तु वृन्दावन एव वासः ॥८॥

वृन्दावनस्याष्टकमेतदुच्चैः
पठन्ति ये निश्चलबुद्धयस्ते।
वृन्दावनेशांघ्रि-सरोजसेवां,
साक्षाल्लभन्ते जनुषोऽन्त एव ॥९॥

* * * * * *

श्रीवृन्दादेव्यष्टकम्

गांगेय-चांपेय-तडिद्विनिन्दि-रोचिः- प्रवाह-स्तपितात्मवृन्दे !।
बन्धूक-बन्धु-द्युति-दिव्यवासो, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥१॥

बिंबाधरोदित्वर-मन्दहास्य, नासाग्र-मुक्ताद्युति-दीपितास्ये !।
विचित्र-रत्नभरणश्रियाढ्ये !, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥२॥

समस्त-वैकुण्ठ-शिरोमणौ श्री, कृष्णस्य वृन्दावन-धन्य-धाम्नि ।
दत्ताधिकारे ! वृषभानु-पुत्रा, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥३॥

त्वदाज्ञया पल्लव-पुष्प-भृङ्ग, मृगादिभिर्माधव-केलिकुञ्जाः ।
मध्यादिभिर्भान्ति विभूष्यमाणा, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥४॥

त्वदीय-दूत्येन निकुञ्ज-यूनो, रत्युत्कयोः केलि-विलास-सिद्धिः।
त्वत्-सौभगं केन निरुच्यतां तद्, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥५॥

रासभिलाषो वसतिश्च वृन्दा, वने त्वदीशांघ्रि-सरोज-सेवा ।

लभ्या च पुंसां कृपाया तवैव, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥६॥

त्वं कीर्त्यसे सात्वत-तंत्रविद्भि, लीलाभिधाना किल कृष्ण-शक्तिः ।
तवैव मूर्तिस्तुलसी नृलोके, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥७॥

भक्त्या विहीना अपराध-लक्षैः, क्षिप्ताश्च कामादि-तरंग-मध्ये ।
कृपामयि ! त्वां शरणं प्रपन्ना, वृन्दे ! नमस्ते चरणारविन्दम् ॥८॥

वृन्दाष्टकं यः श्रृणुयात् पठेद् वा, वृन्दावनाधीश-पदाब्ज-भृङ्गः ।
स प्राप्य वृन्दावन-नित्यवासं, तत् प्रेमसेवां लभते कृतार्थः ॥९॥

* * * * * *

श्रीयमुनाष्टकम्

भ्रातुरन्तकस्य पत्तनेऽभिपत्तिहारिणी
प्रेक्षयातिपापिनोऽपि पापसिन्धुतारिणी ।
नीरमाधुरीभिरप्यशेषचित्तबन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥१॥

हारिवारिधारयाभिमेण्डितोरुखाण्डवा
पुण्डरीकमण्डलोद्यदण्डजालिताण्डवा ।
स्नानकामपामरोग्रपापसंपदन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥२॥

शीकराभिमृष्टजन्तु-दुर्विकमर्दिनी
नन्दनन्दनान्तरंगभक्तिपूरवर्धिनी ।
तीरसंगमाभिलाषिमंगलानुबन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥३॥

द्वीपचक्रवालजुष्टसप्तसिन्धुभेदिनी
श्रीमुकुन्दनिर्मितोरुदिव्यकेलिवेदिनी ।
कान्तिकन्दलीभिरिन्द्रनीलवृन्दनिन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥४॥

माथुरेण मण्डलेन चारुणाभिमण्डिता
प्रेमनद्धवैष्णवाध्ववर्धनाय पण्डिता ।
ऊर्मिदोर्विलासपद्मनाभपादवन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥५॥

रम्यतीररंभमाणगोकदम्बभूषिता
दिव्यगन्धभाक्कदम्बपुष्पराजिरुषिता।
नन्दसूनुभक्तसंघसंगमाभिनन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥६॥

फुल्लपक्षमल्लिकाक्षहंसलक्षकूजिता
भक्तिविद्धदेवसिद्धकिन्नरालिपूजिता।
तीरगन्धवाहगन्धजन्मबन्धरन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥७॥

चिद्विलासवारिपूरभूर्भुवः स्वरापिनी
कीर्तितापि दुर्मदोरूपापमर्मतापिनी।
बल्लवेन्द्रनन्दनाङ्गरागभङ्गगन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥८॥

तुष्टबुद्धिरष्टकेननिर्मलोर्मिचेष्टितां
त्वामनेन भानुपुत्रि ! सर्ववेष्टिताम् ।
यः स्तवीति वर्धयस्व सर्वपापमोचने
भक्तिपूरमस्य देवि ! पुण्डरीकलोचने ॥९॥

* * * * * *

श्री श्रीमधुराष्टकम्

(श्रीमद्वल्लभाचार्य कृत)

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥

वेणुर्म्मधुरो रेणुर्म्मधुरः पाणिर्म्मधुरः पादो मधुरो।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥५॥

गुञ्जा मधुरा, माला मधुरा यमुना मधुरा वीचो मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।६।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
हष्टं मधुरं श्लिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।७।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्म्मधुरा सृष्टिर्म्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।८।।

* * * * * *

अंतर मंदिरे जागो जागा

अंतर मंदिरे जागो जागो
माधव कृष्ण गोपाल (धृ)

नव-अरुण-सम
जागो हृदये मम।
सुंदर गिरिधारी-लाल
माधव कृष्ण गोपाल ।।१।।

नयने घनाये बेतारि बादल
जागो जागो तुमि किशोर श्यामल
श्रीराधा-प्रियतम जागो हृदयमे मम
जागो हे घोष्टेर राखाल ।।२।।
माधव कृष्ण गोपाल....

यशोदा दुलाल एसो एसो नानि-चोर
प्राणेर देवता एसो हे किशोर
लय राधा बामे हृदि व्रज धामे
एसो हे ब्रजेर राखाल ।।३।।
माधव कृष्ण गोपाल....

* * * * * *

ढुले ढुले गोरा चांद

(पारंपारिक बंगाली भजन)

ढुले ढुले गोरा-चांद हरि गुण गाई
आसिया वृंदावने नाचे गौर राय ।।१।।

वृंदावनेर तरुर लता प्रेमे कोय हरिकथा
निकुञ्जेर पक्षि गुलि हरिनाम सुनाई ।।२ ।।

गौर बोले हरि हरि शारी बोले हरि हरि
मुखे मुखे शुक शारी हरि नाम गाई ।।३ ।।

हरिनामे मत्त होये हरिणा आसिछे देय
मयूरी मयूरी प्रेमे नाचिया खेलाय ।।४ ।।

प्राणे हरि ध्याने हरि हरि बोलो बदन भोरि
हरिनाम गेये गेये रसे गले जाइ ।।५ ।।

आसिया जमुनार कुले नाचे हरि हरि बोले
जमनु उठोले एसे चरण धोयाइ ।।६ ।।

* * * * * *

दुःखेर सागर

दुःखेर सागरे भासियेछि
उत्तारिये जानि ना ।।धृ ।।

उथाल देऊ आसिछे छुटिया
कि हबे ताहा जानि ना ।।१ ।।

दीन-दयाल तुमि भगवान
पार कोरो आमाइ शाम्बे तुफान ।।२ ।।

तुमि जदि प्रभु नाहि कोरो पार
पारेर आशा राखि ना ।।३ ।।

* * * * * *

निताइ मिले ना

आमार निताई मिले ना भोलामन
गौर मिले ना
सार गाये माखिले तिलक
गौर मिले ना

भितर बहिर ठिक ना ह ले
गौर प्रेम कि कथाए मिले

(ओ तोर) ठिक ना ह ले उपासना
तिल देइ ना तोर से सोना
सार गाये....
मन परिस्कर कर आगे
गौर भजन अनुरागे
अनुरागे तिलक केते
गौर भजन ह ल ना (हाय भोलामन)

जे जोन मुक्तगोष्टी आदर करे
आमार दयाल निताई ताहाँर घरे
(ओ तोर) तरे भक्ति भारे दकले परे
उत्तर सदा सफल ह बे

* * * * * *

सुंदर-लाला

सुन्दर-लाला शचीर-दुलाल
नाचत श्रीहरिकीर्तन में।
भाले चन्दन तिलक मनोहर
अलका शोभे कपोलन में ।।१।।

शिरे चुडा दरशि बाले
वन-फुल-माला हियापर डोले।
पहिरन पीत-पीतांबर शोभे
नृपुर रुणु-झुणु चरणो में ।।२।।

राधा-कृष्ण एक तनु हे
निधुवन-माझे वंशी बाजाये।
विश्वरूप कि प्रभुजी सहि
आओत प्रकटहि नदीया में ।।३।।

कोई गायत है राधा-कृष्ण नाम
कोई गायत है हरि-गुण गान।
मंगल-तान मृदंग रसाल
बाजत है कोई रंगण में ।।४।।

* * * * * *

श्रीगुरु चरणकमल भजन मन

श्रीगुरु चरण कमल भजन मन,
गुरु कृपा बिना नहीं कोई साधन बल, भज मन भज अनुक्षण ।।१।।

श्रीगुरु चरण कमल भज मन,
मिलता नहीं ऐसा दुर्लभ जन्म, भ्रमत ही चौदह भुवन।
किसी को मिलते हैं अहो भाग्य से, हरिभक्तों के दर्शन ।।२।।

श्रीगुरु चरण कमल भज मन,
कृष्ण कृपा की आनन्द मूर्ति, दीनन करुणानिधान।
ज्ञान भक्ति प्रेम तीनों प्रकाशित, श्रीगुरु पतितपावन ।।३।।

श्रीगुरु चरण कमल भज मन,
श्रुति-स्मृति इतिहास सभी मिले, देखत स्पष्ट प्रमाण ।
तन-मन जीवन गुरु पदे अर्पण, सदा श्री हरिनाम रटन।।४।।
श्रीगुरु चरण कमल भज मन,

* * * * * *

वन्दे कृष्ण नन्दकुमार

वन्दे कृष्ण नन्दकुमार
नन्दकुमार मदनगोपाल
मदन गोपाल मोहन रूप
जय जय देव हरे ।।१।।

गोविंद हरे गोपाल हरे
जय सच्चिनन्दन गौर हरि ।।२।।

जय गोविंद, जय गोपाल, केशव, माधव, दीनदयाल !
अच्युत, केशव, श्रीधर, माधव, गोविंद, गोपाल, हरि !
यमुना पुलिनेमे बंशी बजाये, नटवर वेश धारि !

* * * * * *

श्रीनाम-ध्वनी

जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।
निताई गौर हरि बोल ! हरिबोल ! हरिबोल !

निताई गौरांग, निताई गौरांग– निताई गौरांग गौर हरि !
जय सच्चिनंदन, जय सच्चिनंदन – जय सच्चिनंदन गौर हरि !

गोविंद जय जय, गोपाल जय जय ।
राधारमण हरि, गोविंद जय जय ।।

कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण !
कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण !
कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! रक्ष माम्
कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण ! पाहि माम्
राम ! राघव ! राम ! राघव ! राम ! राघव ! रक्ष माम्
कृष्ण ! केशव ! कृष्ण ! केशव ! कृष्ण ! केशव ! पाहि माम्

* * * * * *

गुरुदेव

(शरणागती)

गुरुदेव !
कृपा–बिंदु दिया, कोरोऽएइ दासे, तृणापेखा अति हीन
सकल सहने, बल दिया कोरोऽ निज मने स्पृहा हीन ।।१।।

सकले सम्मान कोरिते शकति, देहोऽ नाथ ! जथाजथ
तबेऽ तो गाइबो, हरि नाम सुखे, अपराध हऽ बे हत ।।२।।

कबे हेनो कृपा, लाभिया ए जन, कृतार्थ होइबे नाथ !
शक्ति–बुद्धि–हीन, आमि अति दीन, कोरोऽ मोरे आत्मसाथ ।।३।।

जोग्यता विचारे, किछु नाहि पाइ, तोमार करुणा–सार
करुणा ना होइले, कांदिया कांदिया, प्राण ना राखीबो आर ।।४।।

* * * * * *

श्री जगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिंदीतट विपिन संगीत तरलो
मुदाभीरीनारी वदनकमलास्वाद मधुपः ।
रमा शम्भु ब्रह्मामरत्पति गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।१।।

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिकिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचर कटाक्षं च विदधत् ।
सदा श्रीमद्वृन्दावन वसति लीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।२।।

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा मध्यस्थः सकल सुर सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।३।।

कृपा पारावरः सजल जलद श्रेणि रुचिते
रमावाणीरामः स्फुरदमल पंकेरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैराराध्य श्रुतिगणशिखा गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।४।।

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।५।।

परंब्रह्मापीडः कुवलय दलोत्फुल्ल नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित चरणोनन्त शिरसि।
रसनन्दी राधा सरस वपुरालिंगन सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।६।।

न वै याचे राज्यं न च कनकमणिक्यं विभवं
न आचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीत चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।७।।

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते ।
हर त्वं पापानां वितितिमपरां यादवेपते ।
अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।८।।

जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचि।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छीति।।९।।

* * * * * *

श्री ब्रह्म संहिता

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ।।१ ।।

चिन्तामणिप्रकरसद्मसु कल्पवृक्ष
लक्षावृतेषु सुरभीरभिपालयन्तम् ।
लक्ष्मीसहस्रशतसम्भ्रमसेव्यमानं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२ ।।

वेणुं क्वणन्तमरविन्ददलायताक्षं
बर्हावतंसमसिताम्बुदसुन्दराङ्गम् ।
कन्दर्पकोटिकमनीयविशेषशोभं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।३ ।।

आलोलचन्द्रकलसद्-वनमाल्यवंशी
रत्नांगदं प्रणयकेलिकलाविलासम् ।
श्यामं त्रिभंगललितं नियतप्रकाशं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।४ ।।

अङ्गानियस्य सकलेन्द्रियवृत्तिमन्ति
पश्यन्ति पान्ति कलयन्ति चिरं जगन्ति ।
आनन्दचिन्मयसदुज्जवलविग्रहस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।५ ।।

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्तरूपं
आद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च ।
वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।६ ।।

पन्थास्तु कोटिशतवत्सरसम्प्रगम्यो
वायोरथापि मनसो मुनिपुंगवानाम् ।
सोऽप्यस्ति यत्प्रपदसीम्न्यविचिन्त्यतत्त्वे
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।७।।

एकोऽप्यसौ रचयितुं जगदण्डकोटिं
यच्छक्तिरस्ति जगदण्डचया यदन्तः ।

अण्डान्तरस्थपरमाणुचयान्तरस्थं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥८॥

यद्भावभावितधियो मनुजास्तथैव
सम्प्राप्य रूपमहिमासनयानभूषाः ।
सुक्तैर्यमेव निगमप्रथितैः स्तुवन्ति
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥९॥

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्
ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः
गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥१०॥

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥११॥

रामादिमूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन्
नानावतारमकरोद् भुवनेषु किन्तु।
कृष्णः स्वयं समभवत्परमः पुमान् यो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥१२॥

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि-
कोटिष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम् ।
तद् ब्रह्म निष्कलमनंतमशेषभूतं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥१३॥

माया हि यस्य जगदण्डशतानि सूते
त्रैगुण्यतद्विषयवेदवितायमाना।
सत्त्वावलम्बिपरसत्त्वं विशुद्धसत्त्वं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥१४॥

आनन्दचिन्मयरसात्मतया मनःसु
यः प्राणिनां प्रतिफलन् स्मरतामुपेत्य।
लीलायितेन भुवनानि जयत्यजस्त्रं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥१५॥

गोलोकनाम्नि निजधाम्नि तले च तस्य
देवीमहेशहरिधामसु तेषु तेषु।
ते ते प्रभावनिचया विहिताश्च येन
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।१६।।

सृष्टिस्थितिप्रलयसाधनशक्तिरेका
छायेव यस्य भुवनानि विभर्ति दूर्गा।
इच्छानुरूपमपि यस्य च चेष्टते सा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।१७।।

क्षीरं यथा दधि विकारविशेषयोगात्
सञ्जायते न हि ततः पृथगस्ति हेतोः ।
यः शम्भुतामपि तथा समुपैति कार्याद्
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।१८।।

दीपार्चिरेव हि दशान्तरमभ्युपेत्य
दीपायते विवृतहेतुसमानधर्मा।
यस्तादृगेव हि च विष्णुतया विभाति
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।१९।।

यः कारणार्णवजले भजति स्म योग–
निद्रामनन्तजगदण्डसरोमकूपः।
आधारशक्तिमवलम्ब्य परां स्वमूर्तिं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२०।।

यस्यैकनिश्वसितकालमथावलम्ब्य
जीवन्ति लोमविलजा जगदण्डनाथाः ।
विष्णुर्महान् स इह यस्य कलाविशेषो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२१।।

भास्वान् यथाश्मकलेषु निजेषु तेजः
स्वीयं कियत्प्रकटयत्यपि तद्वदत्र।
ब्रह्मा य एष जगदण्डविधानकर्ता
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२२।।

यत्पादपल्लवयुगं विनिधाय कुम्भ
द्वन्द्वे प्रणामसमये स गणाधिराजः।

विघ्नान् विहन्तुमलमस्य जगत्रयस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२३।।

अग्निर्महो गगनमम्बु मरुद्दिश
कालस्तथात्ममनसीति जगत्त्रयाणि।
यस्माद् भवन्ति विभवन्ति विशन्ति यं च
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२४।।

यच्चक्षुरेष सविता सकलग्रहाणां
राजा समस्तसुरमुर्तिरशेषतेजाः
यस्याज्ञया भ्रमति सम्भृतकालचक्रो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२५।।

धर्मोऽथ पापनिचयः श्रुतयस्तपांसि
ब्रह्मादिकीटपतगावधयश्च जीवाः ।
यद्दत्तमात्रविभवप्रकटप्रभावा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२६।।

यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहो स्वकर्म
बन्धानुरूपफलभाजनमातनोती।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२७।।

यं क्रोधकामसहजप्रणयादिभीति
वात्सल्यमोहगुरुगौरवसेव्यभावैः ।
सञ्चिन्त्य तस्य सदृशीं तनुमापुरेते
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ।।२८।।

श्रियः कान्ताः कान्तः परमपुरुषः कल्पतरवो
द्रुमा भूमिश्चिन्तामणिगणमयी तोयममृतम्।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखी
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्याद्यमपि च ।।

स यत्र क्षीराब्धिः स्त्रवति सुरभीभ्यश्च सुमहान्
निमेषार्धाख्यो वा व्रजति न हि यत्रापि समयः
भजे श्वेतद्वीपं तमहमिह गोलोकमिति यं
विदन्तस्ते सन्तः क्षितिविरलचाराः कतिपये ।।२९।।

* * * * * *